जलतरंग

माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड की राजभाषा पत्रिका

अंक-25 मार्च-2026

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

राष्ट्र के लिए युद्धपोत एवं पनडुब्बी निर्माता

पत्रिका के सभी अंकों को पढ़ने के लिए स्कैन करें।

दिनांक 28-11-2025 को भारतीय नौसेना को पी17ए क्लास के तीसरे स्टील्थ फ्रिगेट तारागिरी की सुपुर्दगी के अवसर पर उपस्थित अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक कैप्टन जगमोहन, निदेशकगण, एमडीएल एवं नौसेना के वरिष्ठ अधिकारीगण।

जलतरंग

माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड की राजभाषा पत्रिका

संरक्षक

कैप्टन जगमोहन, भानौ (नि), अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

मुख्य परामर्शदाता

श्री अरुण कुमार चान्द, कार्यकारी निदेशक (मानव संसाधन)

संपादक

श्री श्रीनिवास सिन्हा, महाप्रबंधक (मा.सं. एवं रा.भा.)

श्रीमती शुभ्रा सिन्हा, प्रबंधक (राजभाषा)

सुश्री जयंतिका मुखर्जी, राजभाषा अधिकारी

श्री संदीप दुबे, हिंदी अनुवादक

प्रकाशक

राजभाषा अनुभाग

माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड,

डॉकयार्ड रोड, मुंबई - 400010

फोन: 22-23710456

पत्रिका डिज़ाइन एवं मुद्रित

फोकस कम्युनिकेशन्स

104 सज्जद यसिन चेम्बर्स, 30-एफ, बोमंजी लेन,

फोर्ट, मुंबई- 400001

ईमेल: info@focuscommunications.co.in

अनुक्रमणिका

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक की कलम से...	05
निदेशक (समवाय योजना एवं कार्मिक) का संदेश...	06
कार्यकारी निदेशक (मानव संसाधन) का संदेश...	07
संपादकीय...	08
मेरा सफर : श्री हजारी लाल सैनी, प्रबंधक (पू.खं. - गुणवत्ता आश्वासन)	9-11
जलतरंग : श्री प्रकाश चन्द्र झा, उप महाबंधक (जनि - अभियांत्रिकी)	12-14
एआई की दुनिया : श्री बी. जी. चव्हाण, मुख्य प्रबंधक (जनि - अनुरक्षण)	15-18
नारी - राष्ट्र का आधार : श्रीमती शितल सतीश पवार, पीए कम क्लर्क (का.नि. - मा.सं.)	19
एक लंबी छलाँग - कल की नींव और आज की ऊँचाई : श्री श्रीनिवास सिन्हा, महाप्रबंधक (मा. सं. एवं राजभाषा)	20-22
संरक्षित भविष्य की ओर सुदृढ़ कदम - 55वाँ राष्ट्रीय संरक्षा सप्ताह : श्री बिरेन्द्र सिंह यादव, मुख्य प्रबंधक (जनि - संरक्षा)	23-25
माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड की गौरवशाली यात्रा	26-27
स्वच्छता पखवाड़ा 2025 : श्रीमती लीना संदीप माली, प्रबंधक (मा. सं. - समवाय)	28-30
जलतरंग - पच्चीस सोपानों का गौरवगान : श्री संदीप दुबे, अनुवादक (राजभाषा)	31
उपलब्धियों के स्वर्णिम पल	32-33
कार्यालयीन कामकाज में सरल हिंदी का प्रयोग : श्रीमती शुभ्रा सिन्हा, प्रबंधक (राजभाषा)	34-37
बस सेवा BEST - मुंबई की धड़कन के 100 गौरवशाली वर्ष (1926 - 2026) : श्री चौडय्या थोगाटा, उप प्रबंधक (वित्त)	38-39
किन्नर कैलाश यात्रा : श्री मयूर चंद्रकांत शिंदे, प्रबंधक (पू.खं. - संरक्षा)	40-41
सम्मान की लहरें	42-43
सतर्कता विभाग की सकारात्मक पहल : श्री हणमंत करमाळकर, मुख्य प्रबंधक (सतर्कता)	44-46
मुंबई की होली 2026 का रंग : श्रीमती श्रेया निकेश दिवेकर, डीईओ (राजभाषा)	47
प्राकृतिक वरदान - तुलसी	48-49
आधुनिक मीरा - महादेवी वर्मा	50-51
कॉर्पोरेट समाचार	52-55
माझगांव डॉक के कार्यक्रमों की झलकियाँ	56-61
सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2025	62
राजभाषा गतिविधियाँ	63
पत्रों के दर्पण में जलतरंग	64-65
विशेष उपलब्धियाँ	66

इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं, एमडीएल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक की कलम से...

प्रिय साथियो,

माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड की गृह-पत्रिका 'जलतरंग' के इस 'रजत अंक' के अवसर पर, मैं आप सभी को हार्दिक बधाई देता हूँ। यह अंक केवल एक पत्रिका नहीं है, बल्कि पिछले छह महीनों की हमारी कड़ी मेहनत, टीम-वर्क और देश सेवा के प्रति हमारे पक्के इरादों की एक झलक है। जलतरंग का यह संस्करण हमारी उन बड़ी सफलताओं को समेटे हुए है, जिन्होंने भारतीय नौसेना को और शक्तिशाली बनाया है और 'आत्मनिर्भर भारत' के सपने को नई उड़ान दी है।

अक्टूबर 2025 से मार्च 2026 तक का यह समय एमडीएल के लिए उपलब्धियों भरा रहा है। इस दौरान हमने रक्षा उत्पादन के क्षेत्र में न केवल अपनी तकनीकी ताकत को साबित किया, बल्कि कई बड़े कार्यों को भी समय पर पूरा किया। नई परियोजनाओं के तहत प्लेट कटिंग और कील लेइंग जैसे कार्यक्रमों की सफलता हमारे भविष्य के निर्माण कार्यों की एक मजबूत नींव है। इसके साथ ही, आईएनएस इम्फाल की सेकंड रीडिंग का काम जिस बारीकी और कुशलता से पूरा किया गया, वह हमारी बेहतरीन इंजीनियरिंग का एक बड़ा उदाहरण है।

इस छमाही की सबसे बड़ी कामयाबी प्रोजेक्ट 17ए क्लास के तीसरे स्टील्थ फ्रिगेट 'तारागिरी' की सफल डिलीवरी रही है। देश की समुद्री सीमाओं को और भी सुरक्षित और मजबूत बनाने की दिशा में यह एक बड़ा कदम है। 'तारागिरी' का नौसेना के बेड़े में शामिल होना हमारी उस पूरी टीम की जीत है, जो दिन-रात एमडीएल में देश के गौरव के लिए पसीना बहाती है। ये सफलताएं दिखाती हैं कि माझगांव डॉक सिर्फ जहाज ही नहीं बनाता, बल्कि देश की सुरक्षा के संकल्प को हकीकत में बदलता है।

जलतरंग का यह 25वां अंक आप सभी के साझा प्रयासों और टीम-भावना को समर्पित है। मुझे पूरा भरोसा है कि आने वाले समय में भी हम इसी जोश के साथ नई चुनौतियों का सामना करेंगे और वैश्विक शिपबिल्डिंग के क्षेत्र में एमडीएल की श्रेष्ठता को नई ऊंचाइयों पर ले जाएंगे। हमारी ईमानदारी और काम करने का बढ़िया तरीका ही हमारी असली ताकत है।

मैं इस अंक को इतने शानदार ढंग से तैयार करने के लिए पूरी संपादकीय टीम की तारीफ करता हूँ और आप सभी के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित,

कैप्टन जगमोहन
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

निदेशक (समवाय योजना एवं कार्मिक) का संदेश

माझगांव डॉक परिवार के प्रिय सदस्यगण,

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि हमारी गृह-पत्रिका 'जलतरंग' का रजत अंक प्रकाशित होने जा रहा है। किसी भी पत्रिका के लिए अपनी यात्रा के पच्चीसवें पड़ाव तक पहुँचना एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है और यह हम सभी के लिए अत्यंत गर्व और हर्ष का विषय है।

अपने आरंभ से लेकर अब तक, 'जलतरंग' न केवल हमारे संस्थान की गतिविधियों और निरंतर प्रगति का प्रामाणिक दर्पण रही है, बल्कि इसने हमारे अधिकारियों और कर्मचारियों की साहित्यिक व रचनात्मक प्रतिभा को भी एक सशक्त मंच प्रदान किया है।

हाल ही में 'तारागिरी' की सफलतापूर्वक सुपुर्दगी हमारी तकनीकी उत्कृष्टता और राष्ट्र-निर्माण के प्रति हमारे अटूट संकल्प का एक और प्रत्यक्ष प्रमाण है। इस शानदार उपलब्धि ने हमारे गौरवशाली इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ा है। ऐसे तकनीकी माहौल और कार्य की निरंतर व्यस्तताओं के बीच, यह पत्रिका हमारे विशाल परिवार को वैचारिक और भावनात्मक रूप से एक सूत्र में पिरोने का सराहनीय कार्य कर रही है।

रक्षा उत्पादन में हमारे महत्वपूर्ण योगदान के साथ-साथ, राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार और इसके उत्तरोत्तर प्रयोग को बढ़ावा देने में 'जलतरंग' की भूमिका अत्यंत प्रभावी रही है। रजत अंक तक की यह सफल यात्रा आप सभी के सक्रिय सहयोग, लेखकों की उत्कृष्ट रचनात्मकता और संपादक मंडल की अथक मेहनत का ही प्रतिफल है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि 'जलतरंग' का यह विशेष रजत अंक भी अपने पिछले अंकों की तरह ही ज्ञानवर्धक और रोचक सिद्ध होगा तथा पाठकों के बीच अपनी एक अलग छाप छोड़ेगा।

मैं इस विशेषांक के सफल प्रकाशन के लिए संपादक मंडल, राजभाषा विभाग तथा प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े सभी रचनाकारों और साथियों को हार्दिक बधाई देता हूँ। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए मेरी अनंत शुभकामनाएँ!

जय हिंद !

वासुदेव

कमांडर वासुदेव पुराणिक, भानौ(नि)
निदेशक (समवाय योजना एवं कार्मिक)

कार्यकारी निदेशक (मानव संसाधन) का संदेश

मेरे प्रिय सहकर्मियो और सुधि पाठको,

माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड की गौरवशाली परंपरा में आज एक नया अध्याय जुड़ रहा है। हमारी गृह-पत्रिका 'जलतरंग' का यह 25वाँ अंक (रजत अंक) केवल एक प्रकाशन मात्र नहीं है, बल्कि यह हमारे सामूहिक संकल्प, अटूट परिश्रम और राजभाषा हिंदी के प्रति हमारे गहरे अनुराग का प्रतीक है।

एक छोटा-सा बीज जब वटवृक्ष का रूप लेता है, तो उसकी छाया सबको सुखद लगती है। 'जलतरंग' की यात्रा भी कुछ ऐसी ही रही है। अपने प्रथम अंक से लेकर इस 25वें पड़ाव तक, इस पत्रिका ने एमडीएल के भीतर एक ऐसी साहित्यिक संस्कृति को जन्म दिया है, जहाँ तकनीक और भावनाएँ एक साथ प्रवाहित होती हैं। हमारे कुशल इंजीनियरों से लेकर निष्ठावान श्रमिकों तक, हर किसी ने अपनी लेखनी से इस पत्रिका की गरिमा को बढ़ाया है।

यह अंक विशेष है क्योंकि यह उस समय प्रकाशित हो रहा है जब हमारा संस्थान राष्ट्र निर्माण और जलसीमा सुरक्षा के नए कीर्तिमान स्थापित कर रहा है। युद्धपोतों और पनडुब्बियों के निर्माण की जटिल प्रक्रियाओं के बीच, साहित्य का यह कोना हमें मानवीय संवेदनाओं और अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जोड़े रखता है। 'जलतरंग' ने सिद्ध किया है कि कार्य और कला साथ-साथ चल सकते हैं।

मैं, राजभाषा अनुभाग और इस अंक को मूर्त रूप देने वाली पूरी टीम की सराहना करता हूँ। विशेष रूप से उन लेखकों को बधाई देता हूँ जिन्होंने अपनी मौलिक रचनाओं से इस रजत अंक को सजाया है। मुझे अटूट विश्वास है कि 'जलतरंग' का यह अंक आप सभी के लिए प्रेरणादायक और ज्ञानवर्धक सिद्ध होगा।

आइए, हम इस 25वें अंक के माध्यम से राजभाषा के गौरव को और ऊँचा उठाने का संकल्प लें।

शुभकामनाओं सहित,

अरुण कु चान्द

श्री अरुण कुमार चान्द
कार्यकारी निदेशक (मानव संसाधन)

संपादकीय

माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड के गौरवशाली इतिहास में आज एक और स्वर्णिम अध्याय जुड़ रहा है। हमारी राजभाषा गृहपत्रिका 'जलतरंग' अपने 25वें अंक (रजत अंक) के पड़ाव पर पहुँच गई है। यह केवल एक पत्रिका का अंक नहीं, बल्कि हमारी एकजुटता, नवाचार और देश की समुद्री सुरक्षा के प्रति हमारी अटूट प्रतिबद्धता का प्रतिबिंब है।

दो दशकों से अधिक की इस यात्रा में एमडीएल ने न केवल जहाजरानी और रक्षा क्षेत्र में नए कीर्तिमान स्थापित किए हैं, बल्कि 'आत्मनिर्भर भारत' के संकल्प को भी धरातल पर उतारा है। 'जलतरंग' ने इन उपलब्धियों को शब्दों में पिरोकर हमारे कर्मचारियों की मेहनत और तकनीकी कौशल को साझा करने का बेहतरीन माध्यम प्रदान किया है।

इस रजत विशेषांक को तैयार करते समय हमारा प्रयास रहा है कि इसमें एमडीएल की गौरवगाथा के साथ-साथ भविष्य के आधुनिक दृष्टिकोण का भी समावेश हो। हमने इस अंक में सामग्री और प्रस्तुति के स्तर पर गुणवत्ता को प्राथमिकता दी है ताकि यह पाठकों के लिए जानकारीपूर्ण और प्रेरणादायक साबित हो।

राजभाषा हिंदी का संवर्धन हमारे कार्यबल की संस्कृति का अभिन्न हिस्सा है। विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से हमने इस भाषा को और अधिक सरल और सुलभ बनाने का निरंतर प्रयास किया है। इस विशेष अवसर पर, मैं उन सभी लेखकों, कर्मचारियों और सहयोगियों का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने अपने योगदान से 'जलतरंग' के इस सफर को सार्थक बनाया है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह रजत अंक आप सभी के लिए स्मरणीय और ज्ञानवर्धक सिद्ध होगा। सभी पाठकों और एमडीएल परिवार को जलतरंग रजत अंक प्रकाशन की हार्दिक शुभकामनाएँ!

श्रीनिवास सिन्हा

श्री श्रीनिवास सिन्हा
महाप्रबंधक (मा.सं. एवं रा.भा.)

संस्मरण

मेरा सफर

माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड (एमडीएल) से जुड़ी एक जीवन-यात्रा

श्री हजारी लाल सैनी,
प्रबंधक (पू.खं. - गुणवत्ता आश्वासन)

हर व्यक्ति के जीवन में कुछ यादें ऐसी होती हैं, जो समय के साथ धुंधली नहीं पड़तीं, बल्कि और अधिक गहरी होती जाती हैं। वे केवल स्मृतियाँ नहीं रहतीं, बल्कि व्यक्ति की पहचान का हिस्सा बन जाती हैं। मेरे जीवन में भी एक ऐसी ही यादों से भरी कहानी है, जो सीधे-सीधे हमारी प्रतिष्ठित संस्था माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड (एमडीएल) से जुड़ी हुई है। यह केवल एक संस्था नहीं, बल्कि मेरे जीवन की कहानी का वह अध्याय है, जिसमें मेहनत है, सीख है, गौरव है, अपनापन है और सबसे बढ़कर-नियति का अद्भुत विधान।

नौसेना और शिपयार्ड का रिश्ता आदेश और अनुपालन का नहीं, बल्कि विश्वास, सहयोग और राष्ट्रसेवा का होता है। यहाँ हर प्लेट पर राष्ट्र की सुरक्षा की लकीरें खिंची होती हैं और हथौड़ों की आवाज़ भी देशभक्ति की ताल पर पड़ती है। जहाँ युद्धपोत बनते हैं, वहाँ केवल स्टील नहीं ढलता, वहाँ देश की सुरक्षा का संकल्प आकार लेता है। युद्धपोत केवल समुद्र में तैरने वाली मशीन नहीं होता, वह अपने भीतर सैकड़ों नाविकों का विश्वास और पूरे राष्ट्र की उम्मीदें लेकर चलता है।

पहली मुलाकात: वर्ष 1997

वर्ष 1997 का वह समय आज भी मेरी स्मृतियों में ताज़ा है, जब मैंने पहली बार इस गौरवशाली संस्थान में कदम रखा। उस समय माझगांव डॉक देश भर में चर्चित 'दिल्ली श्रेणी' के प्रथम विध्वंसक युद्धपोत (परियोजना-15) के कारण सुर्खियों में था। भारतीय नौसेना की ओर से मुझे आईएनएस दिल्ली के 'सेवा-प्रवेश दल' (Commissioning Crew) के सदस्य के रूप में दिल्ली प्रकोष्ठ में भेजा गया था।

सच कहूँ तो उससे पहले मैंने कभी माझगांव डॉक को देखा तक नहीं था। जब पहली बार इस परिसर में प्रवेश किया तो सब कुछ बिल्कुल नया लगा। अब तक मैंने जहाजों पर सेवा की थी और अनेक समुद्री अभियानों में भाग लिया था, लेकिन

निर्माण अवस्था में किसी युद्धपोत को पहली बार यहीं देखा। उसी क्षण मन में एक अनकहा सा भाव जन्म ले चुका था कि एक दिन मैं इस संस्था में फिर लौटूँगा और अपनी सेवा दूँगा। शायद इसे ही नियति कहते हैं क्योंकि यह एहसास आज से लगभग 27 वर्ष पहले ही मेरे भीतर अंकुरित हो चुका था।

आईएनएस दिल्ली से आईएनएस मुंबई तक

वर्ष 1997 में जहाज का कमीशनिंग कार्य पूर्ण हुआ और हम उसे सेवा में शामिल कराकर चले गए। इसके बाद माझगांव डॉक में मेरा आना-जाना लगातार बना रहा- कभी अतिरिक्त पुर्जों के लिए, तो कभी गारंटी दोष निवारण (GDR) के कार्यों के सिलसिले में। वर्ष 2004 में मेरी बदली आईएनएस मुंबई में हो गई। यह जहाज भी दिल्ली श्रेणी का तीसरा प्रोजेक्ट था और अपने समय में नौसेना का सर्वश्रेष्ठ युद्धपोत माना जाता था। इस दौरान माझगांव डॉक में मेरा आना-जाना और बढ़ गया क्योंकि जहाज पर सभी जानते थे कि मुझे यहाँ की प्रक्रियाओं और कार्यप्रणाली की अच्छी समझ है।

नई जिम्मेदारियाँ, नया मोड़

वर्ष 2008 में मेरा स्थानांतरण 'मशीनरी परीक्षण इकाई' (MTU) में हो गया, जिसकी जिम्मेदारी नए और पुराने जहाजों के परीक्षण कार्यों की होती है। यहाँ मुझे 'शिवालिक श्रेणी' के निर्माणाधीन युद्धपोतों के परीक्षण कार्य सौंपे गए। यहीं से मेरी यात्रा ने एक नया और अधिक जिम्मेदारी भरा मोड़ लिया।

जब मैं इस संगठन में आया, तो देखा कि काम बहुत अधिक है और इसे पूरा करने के लिए समर्पण व निष्ठा के साथ बहुत समय देना पड़ेगा। मैंने अधिकारियों से निवेदन किया कि मुझे यहीं रहकर कार्य करने की अनुमति दी जाए ; मेरे निवेदन को मंजूरी मिली और मुझे एफओबी (FOB) भवन में एक कक्ष आवंटित कर दिया गया। शिपयार्ड में लोगों के

साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम करना एक परिवार जैसा वातावरण बन गया। उस समय परियोजना प्रभारी महाप्रबंधक श्री शिंदे साहब और उनके साथ अनुभवी अधिकारियों की एक टीम थी, जिनमें श्री प्रजापति जी और श्री सुमन राजा जी जैसे नाम शामिल थे। उनके साथ बने संबंध केवल पेशेवर नहीं, बल्कि आपसी सम्मान और अपनत्व से भरे थे।

कठिन निर्णय और नई दिशा

पारिवारिक परिस्थितियों के कारण मुझे भारतीय नौसेना में आगे सेवा न करने का एक कठिन निर्णय लेना पड़ा। यह फैसला आसान नहीं था, पर कर्तव्यों और यथार्थ के बीच संतुलन बनाना जरूरी था। इसी दौरान नियति ने फिर करवट ली और मेरा स्थानांतरण 'युद्धपोत पर्यवेक्षण दल' (WOT) में हो गया, जो इसी प्रांगण में स्थित है। वर्ष 2010 तक मैं एक

बार फिर पूरी तरह माझगांव डॉक के कार्यों में संलग्न हो गया। उस समय कोलकाता और गोदावरी श्रेणी जैसे महत्वपूर्ण प्रोजेक्ट्स चल रहे थे।

नौसेना से विदाई

31 जनवरी 2012 को मैंने भारतीय नौसेना को औपचारिक रूप से अलविदा कहा। वर्दी शरीर से उतरी थी, पर अनुशासन आत्मा में रह गया; सेवा कागजों में समाप्त हुई थी, पर राष्ट्र के प्रति निष्ठा बनी रही। एक साथी ने तब मुस्कुराते हुए कहा था कि समुद्र विशाल है, पर नौसेना का दिल उससे भी बड़ा होता है। सेवानिवृत्ति से पहले ही मुझे एक निजी कंपनी 'योमैन मरीन सर्विस' में नियुक्ति मिली और संयोगवश मेरा कार्यस्थल फिर वही नेवल डॉकयार्ड मुंबई रहा। पद बदला, पर भावना और समर्पण वही रहा।

नियति का पूर्ण होना: वर्ष 2013

वर्ष 2013 में माझगांव डॉक में पूर्व आर्टिफिशर सैनिकों के लिए भर्ती निकली। चयन प्रक्रिया और साक्षात्कार के बाद मुझे 'वरिष्ठ अभियंता' (Senior Engineer) के पद के लिए चुना गया। 28 नवंबर 2013 को मैंने माझगांव डॉक को अपने स्थायी करियर के रूप में जॉइन किया।

दूसरी पारी, वही जज्बा

सच्चा सैनिक वही होता है जो चुनौती से पीछे नहीं हटता, बल्कि उसे सीखने का अवसर बना लेता है। सरफेस शिप्स पर 25 वर्षों के अनुभव के बाद, मुझे ईस्ट यार्ड में सबमरीन प्रोजेक्ट्स (पनडुब्बी) की जिम्मेदारी मिली। यह क्षेत्र तकनीकी रूप से भिन्न और चुनौतीपूर्ण था। मैंने इसे सीखने का अवसर माना और स्वयं को गुणवत्ता मानकों के अनुरूप ढाला। 'स्कॉर्पीन श्रेणी' की तीन पनडुब्बियों पर कार्य करते हुए मैंने प्रणाली एकीकरण और समन्वय के दायित्वों को पूरी कुशलता से निभाया। यह मेरी सेवा की दूसरी पारी थी, जिसे मैंने हमेशा पहली पारी जैसा ही सम्मान दिया।

माझगांव डॉक: मेरी पहचान

जहाँ सपने बनते हैं लोहा होकर,
जहाँ मेहनत चमकती है सोना होकर,
जहाँ हर दिन राष्ट्र की रक्षा लिखी जाती है,
वह माझगांव डॉक मेरी पहचान बन जाती है।
मैं नौसेना का सिपाही था,
फिर यहाँ कर्म का सारथी बन गया;
समुद्र की लहरों में मेरा अक्स था,
अब इस माझगांव डॉक में मेरा नाम बन गया है।

31 मई 2028 को मैं इस महान संगठन से अपनी सेवा पूरी कर एक गहरी संतुष्टि के साथ विदा लूँगा। माझगांव डॉक मेरे लिए केवल कार्यस्थल नहीं, बल्कि राष्ट्र-निर्माण की एक प्रयोगशाला है।

वंदे मातरम्। जय हिंद।

श्री प्रकाश चन्द्र झा,
उप महाबंधक (जनि - अभियांत्रिकी)

जलतरंग :

रजत अंक की दिव्य अनुगूंज और साहित्यिक साधना का उत्सव

भारतीय सांस्कृतिक परंपरा में संगीत केवल श्रवण का विषय नहीं, अपितु आत्मा की अनुभूति का माध्यम है। इस समृद्ध परंपरा में जलतरंग एक ऐसा अद्वितीय वाद्य यंत्र है, जो अपनी सरल संरचना में भी गहन दार्शनिक अर्थ समेटे हुए है। विभिन्न आकारों के चीनी मिट्टी के पात्रों में जल की अलग-अलग मात्राएँ भरकर जब उन्हें अर्धवृत्ताकार क्रम में सजाया जाता है और छोटी लकड़ी के कोमल स्पर्श से स्वर उत्पन्न किए जाते हैं, तब जो ध्वनि तरंगें जन्म लेती हैं, वे केवल संगीत नहीं होतीं- वे भावनाओं की जीवंत अभिव्यक्ति होती हैं। प्रत्येक स्वर मानो मनुष्य के हृदय के किसी गुप्त कोने को स्पर्श कर उसे स्पंदित कर देता है।

जलतरंग की यही प्रकृति-जल और स्वर का अद्भुत समन्वय- मानव जीवन के गूढ़ सत्य को भी उद्घाटित करती है। मनुष्य का शरीर भी तो इसी प्रकृति का प्रतिरूप है- मिट्टी का बना हुआ, लगभग दो तिहाई जल से परिपूर्ण, और भावनाओं के स्पर्श से तरंगित होने वाला। जब भावनाएँ, विचार और अनुभूतियाँ मन में उठती हैं, तो वे भी तरंगों का ही रूप लेती हैं। इन तरंगों का समन्वय जब शब्दों में ढलता है, तब साहित्य जन्म लेता है। इसी दृष्टि से "जलतरंग" नाम केवल एक वाद्य का प्रतीक नहीं, बल्कि जीवन, संवेदना और सृजन की एक व्यापक अवधारणा का द्योतक है।

इन्हीं भावों की सजीव अभिव्यक्ति है "जलतरंग" गृह पत्रिका, जो आज अपने पच्चीसवें- रजत अंक- के प्रकाशन के साथ एक गौरवपूर्ण पड़ाव पर आसीन है। यह अवसर केवल एक अंक के प्रकाशन का नहीं, बल्कि एक दीर्घकालीन साधना, निरंतरता और सृजनात्मक यात्रा के उत्सव का क्षण है। पच्चीस अंकों की यह यात्रा उस नदी के समान है, जो अनेक मोड़ों, बाधाओं और विस्तारों को पार करती हुई अंततः एक विशाल प्रवाह का रूप ले लेती है।

"जलतरंग" का नाम अपने आप में अत्यंत सार्थक और प्रतीकात्मक है। जिस संस्थान से यह पत्रिका जुड़ी है- जहाँ जहाजों, पनडुब्बियों और सागरीय संरचनाओं का निर्माण होता है- वहाँ जल केवल एक तत्व नहीं, बल्कि जीवन का आधार है। सागर में गतिमान प्रत्येक जलयान अपने साथ तरंगों को जन्म देता है। ये तरंगें केवल भौतिक नहीं होतीं, बल्कि वे गति, ऊर्जा और परिवर्तन का प्रतीक होती हैं। सागर स्वयं भी ज्वार और भाटा के माध्यम से अपनी लयबद्धता को प्रकट करता है। इस प्रकार "जलतरंग" नाम उस समूचे सागरीय जीवन और उसके अंतर्निहित दर्शन का एक सजीव प्रतीक बन जाता है।

किसी भी पत्रिका का पच्चीसवाँ अंक- रजत अंक- उसकी परिपक्वता, स्थायित्व और सफलता का प्रतीक होता है। यह उस वृक्ष के समान है, जो वर्षों की साधना, पोषण और संघर्ष के पश्चात फल-फूल से युक्त हो जाता है। "जलतरंग" ने अपने प्रारंभिक चरणों में जिन चुनौतियों का सामना किया होगा, वे आज उसकी उपलब्धियों के सामने तुच्छ प्रतीत होती हैं। यह यात्रा न केवल निरंतर रही है, बल्कि प्रत्येक अंक के साथ इसमें नवीनता, परिष्कार और साहित्यिक गरिमा का समावेश भी होता गया है।

विगत अंकों पर दृष्टि डालें तो स्पष्ट होता है कि "जलतरंग" ने सदैव विविधता और गुणवत्ता का संतुलन बनाए रखा है। इसमें प्रकाशित लेख, कविताएँ, संस्मरण और विचार केवल मनोरंजन के साधन नहीं, बल्कि बौद्धिक और भावनात्मक विकास के माध्यम भी रहे हैं। प्रत्येक अंक मानो एक नवीन पुष्प के समान है, जो अपनी सुगंध से पाठकों के मन को आह्लादित करता है।

इस पत्रिका की सफलता के पीछे संपादक मंडल की कर्मठता, दूरदर्शिता और साहित्यिक अभिरुचि का विशेष योगदान रहा है। संपादन केवल सामग्री का संकलन नहीं, बल्कि एक कला है- विचारों को दिशा देने की, शब्दों को सौंदर्य प्रदान करने की और विविधता को एकता में पिरोने की। "जलतरंग" के संपादकों ने इस कला को न केवल आत्मसात किया है, बल्कि उसे उत्कृष्टता के स्तर तक पहुँचाया है।

"जलतरंग" केवल एक पत्रिका नहीं, बल्कि एक सशक्त संवाद माध्यम है। एक बड़े संस्थान में, जहाँ विभिन्न विभाग, इकाइयाँ और कार्यक्षेत्र होते हैं, वहाँ समन्वय और संवाद अत्यंत आवश्यक होता है। यह पत्रिका उन सभी को एक

सूत्र में बाँधने का कार्य करती है। यह न केवल संस्थान की गतिविधियों को प्रस्तुत करती है, बल्कि उसमें कार्यरत प्रत्येक व्यक्ति को अपनी अभिव्यक्ति का मंच भी प्रदान करती है।

विशेष रूप से, यह तथ्य अत्यंत महत्वपूर्ण है कि "जलतरंग" राजभाषा हिंदी में प्रकाशित होती है। यह न केवल भाषा के प्रति सम्मान का प्रतीक है, बल्कि संवाद की सरलता और व्यापकता का भी द्योतक है। हिंदी भाषा की सहजता और भावप्रवणता इस पत्रिका को और अधिक प्रभावशाली बनाती है। यह भाषा के माध्यम से हृदय को हृदय तक पहुँचाने का कार्य करती है।

इस पत्रिका की उपलब्धियाँ भी प्रेरणादायक हैं। संस्थान और स्थानीय स्तर से आगे बढ़कर इसने राष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी पहचान बनाई है। विभिन्न प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित होना, यहाँ तक कि महामहिम राष्ट्रपति के कर-कमलों से वर्ष 2015 में कीर्ति पुरस्कार प्राप्त करना, इसकी गुणवत्ता, विश्वसनीयता और प्रभावशीलता का प्रमाण है। ये उपलब्धियाँ केवल गौरव के प्रतीक नहीं, बल्कि भविष्य के लिए प्रेरणा स्रोत भी हैं।

जहाज और पनडुब्बी निर्माण जैसे जटिल और श्रमसाध्य कार्यों के बीच "जलतरंग" का अस्तित्व एक शीतल समीर के समान है। जहाँ एक ओर कार्यस्थल पर मशीनों का शोर, उच्च तापमान और समयबद्धता का दबाव होता है, वहीं दूसरी ओर यह पत्रिका कर्मचारियों के लिए एक रचनात्मक परिवेश प्रदान करती है। यह उन्हें अपने भीतर के विचारों, भावनाओं और कल्पनाओं को अभिव्यक्त करने का अवसर देती है।

विशेष रूप से श्रमिकों के लिए यह पत्रिका एक अनमोल मंच है। कठिन परिश्रम के बीच जब कोई श्रमिक अपनी अनुभूतियों को शब्दों में ढालता है, तो वह साहित्य केवल शब्दों का संकलन नहीं रहता, बल्कि वह जीवन के यथार्थ का सजीव चित्रण बन जाता है। "जलतरंग" ऐसे ही रचनाकारों को प्रोत्साहित करती है, उन्हें पहचान देती है और उनकी प्रतिभा को निखारने का अवसर प्रदान करती है।

यह पत्रिका नवोदित लेखकों के लिए भी एक प्रेरणा स्रोत है। जो लोग अपने विचारों को अभिव्यक्त करना चाहते हैं, परंतु मंच के अभाव में संकोच करते हैं, उनके लिए "जलतरंग" एक सशक्त सहारा बनती है। यह उन्हें विश्वास देती है कि उनकी रचनाएँ भी महत्वपूर्ण हैं, उनके विचार भी मूल्यवान हैं।

समय-समय पर "जलतरंग" ने विशेष अंकों के माध्यम से विविध विषयों को भी समाहित किया है। चाहे वह भारत के वैज्ञानिकों पर आधारित अंक हो, चाहे भारत के स्वतंत्रता सेनानियों को समर्पित अंक हो, चाहे साहित्यकारों पर केंद्रित विशेषांक, चाहे भारतीय संविधान केन्द्रित अंक हो या महाराष्ट्र-गुजरात की ऐतिहासिक झलकियों वाला अंक हो- प्रत्येक अंक ज्ञान का भंडार रहा है। ये अंक न केवल पठनीय और सरहनीय हैं, बल्कि संग्रहणीय भी हैं। वे पाठकों के लिए संदर्भ सामग्री के रूप में भी उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं।

इस प्रकार "जलतरंग" केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं, बल्कि ज्ञान, साहित्य और संवेदनाओं का संगम है। यह एक ऐसी धारा है, जिसमें विविध विचार, अनुभव और अभिव्यक्तियाँ एक साथ प्रवाहित होती हैं।

रजत अंक के इस पावन अवसर पर यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि "जलतरंग" ने अपने नाम को सार्थक किया है। जिस प्रकार जल की तरंगें निरंतर गतिशील रहती हैं, उसी प्रकार यह पत्रिका भी निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। इसकी प्रत्येक प्रस्तुति, प्रत्येक रचना और प्रत्येक विचार एक नई तरंग के समान है, जो पाठकों के हृदय में स्पंदन उत्पन्न करती है।

अंततः, "जलतरंग" केवल एक पत्रिका नहीं, बल्कि एक जीवंत परंपरा है- एक ऐसी परंपरा, जो सृजन, संवेदना और संवाद को एक सूत्र में पिरोती है। अपने पच्चीसवें अंक के साथ यह पत्रिका न केवल अपने अतीत की उपलब्धियों का उत्सव मना रही है, बल्कि भविष्य की संभावनाओं का भी स्वागत कर रही है।

आशा और विश्वास है कि "जलतरंग" की यह साहित्यिक यात्रा इसी प्रकार निरंतर आगे बढ़ती रहेगी, नये आयाम स्थापित करेगी और अपने पाठकों के जीवन में भावनाओं, विचारों और आनंद की मधुर तरंगें उत्पन्न करती रहेगी। यह पत्रिका सागर की अनंतता की भाँति, और जलतरंग के संगीत की मधुरता की तरह, सदैव प्रवाहित और प्रेरणादायक बनी रहे- यही कामना है।

एआई की दुनिया: वर्तमान, विकास और भविष्य

श्री बी. जी. चव्हाण,
मुख्य प्रबंधक (जनि - अनुरक्षण)

प्रस्तावना:

21वीं सदी को यदि किसी तकनीक ने सबसे अधिक प्रभावित किया है, तो वह है कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence - AI)। आज AI केवल वैज्ञानिक प्रयोगशालाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि यह हमारे दैनिक जीवन का हिस्सा बन चुका है। स्मार्टफोन, इंटरनेट, ऑनलाइन शॉपिंग, चिकित्सा, शिक्षा, बैंकिंग, कृषि और उद्योग- लगभग हर क्षेत्र में AI का उपयोग हो रहा है। वर्तमान समय में AI की प्रगति इतनी तेज़ है कि कई विशेषज्ञ इसे 'नई औद्योगिक क्रांति' मानते हैं। 2022 के बाद जनरेटिव AI और बड़े भाषा मॉडल (Large Language Models) के आने से AI आम लोगों तक पहुँच गया है। 2024-2026 के बीच AI का उपयोग व्यवसाय, सरकार और दैनिक जीवन में तेज़ी से बढ़ा है और वैश्विक निवेश हर वर्ष 100 अरब डॉलर से अधिक हो गया है।

1. कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) क्या है

कृत्रिम बुद्धिमत्ता वह तकनीक है जिसके माध्यम से कंप्यूटर और मशीनों को इस तरह बनाया जाता है कि वे मानव जैसी सोच, सीखने और निर्णय लेने की क्षमता प्राप्त कर सकें। सरल शब्दों में, AI का उद्देश्य मशीनों को सोचना, समझना और निर्णय लेना सिखाना है।

AI के मुख्य कार्य

* डेटा का विश्लेषण करना
* पैटर्न पहचानना
* निर्णय लेना
* भविष्य की भविष्यवाणी करना
* प्राकृतिक भाषा को समझना

उदाहरण: वॉयस असिस्टेंट, ऑनलाइन शॉपिंग में सुझाव, चेहरे की पहचान, स्वायत्त वाहन (Self-driving cars) और चैटबॉट्स।

2. AI का इतिहास

AI का विकास एक दिन में नहीं हुआ। यह कई दशकों की वैज्ञानिक खोज और अनुसंधान का परिणाम है।

(i) प्रारंभिक चरण (1950–1970): AI की अवधारणा पहली बार 1950 में ब्रिटिश वैज्ञानिक एलन ट्यूरिंग ने प्रस्तुत की थी। 1956 में डार्टमाउथ सम्मेलन में पहली बार 'Artificial Intelligence' शब्द का उपयोग किया गया।

(ii) AI विंटर (1970–1990): इस अवधि में AI पर शोध धीमा हो गया क्योंकि कंप्यूटर की क्षमता सीमित थी और डेटा उपलब्ध नहीं था।

(iii) मशीन लर्निंग का दौर (1990–2010): इंटरनेट और कंप्यूटर शक्ति बढ़ने के साथ AI ने फिर गति पकड़ी। मुख्य प्रगति: सर्च इंजन एल्गोरिद्म और डेटा विश्लेषण। मुख्य प्रगति:,मशीन लर्निंग,,डेटा विश्लेषण,स्पीच रिकॉग्निशन,सर्च इंजन एल्गोरिदम

(iv) डीप लर्निंग और बिग डेटा (2010–2020): इमेज पहचान और वॉयस असिस्टेंट का विकास हुआ।

(v) जनरेटिव AI युग (2022–2026): 2022 के बाद AI ने नया रूप लिया जिसे 'Generative AI' कहा जाता है। आज AI केवल जानकारी देने वाला नहीं, बल्कि रचनात्मक कार्य करने वाला सहयोगी बन गया है।

3. AI कैसे काम करता है?

AI कई तकनीकों के संयोजन से काम करता है :

(i) मशीन लर्निंग (Machine Learning): मशीन बिना किसी विशिष्ट प्रोग्रामिंग के डेटा से सीखती है (जैसे: ईमेल स्पैम फिल्टर)।

(ii) डीप लर्निंग : यह न्यूरल नेटवर्क का उपयोग करता है (जैसे: चेहरा पहचानना)।

(iii) नेचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग (NLP): यह मशीनों को मानव भाषा समझने में सक्षम बनाती है (जैसे: भाषा अनुवाद)।

(iv) कंप्यूटर विज़न : इससे कंप्यूटर तस्वीरों और वीडियो को समझ सकता है।

4. वर्तमान समय में AI की स्थिति (2026)

आज AI केवल तकनीक नहीं बल्कि सामाजिक परिवर्तन का साधन बन चुका है। 2024-2026 के बीच AI का उपयोग घरेलू स्तर तक पहुँच गया है और विशेषज्ञ इसे बिजली की तरह एक बुनियादी तकनीक मान रहे हैं।

5. विभिन्न क्षेत्रों में AI के उपयोग

* **(i) स्वास्थ्य क्षेत्र :** रोग का प्रारंभिक निदान, मेडिकल इमेज विश्लेषण और रोबोटिक सर्जरी में सहायक।

AI डॉक्टरों को निर्णय लेने में सहायता करता है और उपचार की गुणवत्ता बढ़ाता है।

ii) शिक्षा

AI आधारित शिक्षा प्रणाली छात्रों के लिए व्यक्तिगत सीखने का अनुभव प्रदान करती है।

उदाहरण: स्मार्ट लर्निंग प्लेटफॉर्म,वर्चुअल शिक्षक, स्वचालित परीक्षा मूल्यांकन

iii) कृषि

कृषि क्षेत्र में AI किसानों की मदद कर रहा है।

उपयोग: फसल उत्पादन का अनुमान, मिट्टी विश्लेषण, स्मार्ट सिंचाई, कीट पहचान

iv) उद्योग और व्यवसाय

AI उद्योगों में उत्पादकता बढ़ा रहा है।

उदाहरण: स्वचालित उत्पादन, गुणवत्ता नियंत्रण, ग्राहक सेवा चैटबॉट, डेटा विश्लेषण

v)परिवहन

AI आधारित तकनीक परिवहन को सुरक्षित और स्मार्ट बना रही है।

उदाहरण: सेल्फ-ड्राइविंग कार, स्मार्ट ट्रैफिक प्रबंधन, लॉजिस्टिक्स अनुकूलन

vi) मनोरंजन और मीडिया :

AI फिल्म, संगीत और कला में भी उपयोग हो रहा है।

उदाहरण : वीडियो संपादन,संगीत निर्माण,गेम डिजाइन,फिल्म स्पेशल इफेक्ट्स

6. भारत में AI का विकास

भारत भी AI के क्षेत्र में तेजी से आगे बढ़ रहा है। सरकार ने AI को बढ़ावा देने के लिए कई पहलें शुरू की हैं, जिनमें राष्ट्रीय AI पोर्टल (INDIAai) शामिल है, जिसे इलेक्ट्रॉनिक्स और आईटी मंत्रालय तथा NASSCOM के सहयोग से विकसित किया गया है। 2026 में नई दिल्ली में

AI Impact Summit आयोजित किया गया, जिसमें 30 से अधिक देशों के विशेषज्ञों और कंपनियों ने भाग लिया और AI के सामाजिक व आर्थिक प्रभावों पर चर्चा की। भारत में AI का उपयोग विशेष रूप से इन क्षेत्रों में बढ़ रहा है: स्वास्थ्य, कृषि,शिक्षा, स्मार्ट शहर, डिजिटल सेवाएँ|

7. AI के लाभ

AI के कई महत्वपूर्ण लाभ हैं:

i. कार्य की गति और दक्षता बढ़ाना

AI बड़ी मात्रा में डेटा को तेजी से विश्लेषित कर सकता है।

ii. मानव त्रुटियों में कमी

स्वचालन के कारण गलतियों की संभावना कम होती है।

iii. नई खोज और नवाचार

AI वैज्ञानिक अनुसंधान और दवा विकास में सहायता करता है।

iv. आर्थिक विकास

AI आने वाले वर्षों में वैश्विक अर्थव्यवस्था में ट्रिलियन डॉलर का योगदान दे सकता है।

8. AI की चुनौतियाँ और जोखिम :

AI के कई फायदे हैं, लेकिन इसके साथ कुछ चुनौतियाँ भी हैं।

i) रोजगार पर प्रभाव

AI कई पारंपरिक नौकरियों को प्रभावित कर सकता है। कुछ अनुमान बताते हैं कि AI लगभग 25% कार्य को स्वचालित कर सकता है, हालांकि यह नए रोजगार भी पैदा करेगा।

ii) डेटा सुरक्षा और गोपनीयता

AI को बड़ी मात्रा में डेटा की आवश्यकता होती है, जिससे डेटा सुरक्षा की समस्या उत्पन्न हो सकती है।

iii) गलत सूचना (Deepfake)

AI की मदद से नकली वीडियो और चित्र बनाना संभव है, जो समाज के लिए चुनौती बन सकता है।

iv) नैतिक और सामाजिक मुद्दे

AI के निर्णयों में पारदर्शिता और निष्पक्षता सुनिश्चित करना आवश्यक है।

9. AI का भविष्य

AI का भविष्य संभावनाओं से भरा है। विशेषज्ञ मानते हैं कि भविष्य में AI निम्न क्षेत्रों में बड़ी भूमिका निभाएगा। वैज्ञानिक अनुसंधान, अंतरिक्ष अन्वेषण, स्मार्ट शहर, व्यक्तिगत चिकित्सा, स्वचालित परिवहन कई शोधकर्ता Artificial General Intelligence (AGI) पर भी काम कर रहे हैं, जो मानव जैसी व्यापक बुद्धिमत्ता वाली मशीनें बनाने का प्रयास है।

10. निष्कर्ष

1. कृत्रिम बुद्धिमत्ता आज की दुनिया की सबसे प्रभावशाली तकनीकों में से एक है। यह मानव जीवन के लगभग हर क्षेत्र को प्रभावित कर रही है।
2. AI ने स्वास्थ्य, शिक्षा, उद्योग, कृषि और विज्ञान में नई संभावनाएँ पैदा की हैं। हालांकि इसके साथ रोजगार, सुरक्षा और नैतिकता से जुड़ी चुनौतियाँ भी हैं।
3. भविष्य में AI मानव का प्रतिस्पर्धी नहीं बल्कि सहयोगी बनकर काम करेगा। यदि इसे जिम्मेदारी और नैतिकता के साथ विकसित किया जाए, तो AI मानव समाज के विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

नारी - राष्ट्र का आधार

श्रीमती शितल सतीश पवार,
पीए कम क्लर्क (का.नि. - मा.सं.)

समय की लहरें कितनी तेजी से बहती हैं, इसका अहसास मुझे 'जलतरंग' के इस 25वें अंक को देखते हुए हो रहा है। नवंबर 2019 में जब मैंने माझगाँव डॉक (MDL) के इस विशाल परिवार में कदम रखा था, तब मन में एक जिज्ञासा थी कि इतने बड़े संस्थान की कार्यप्रणाली का हिस्सा बनना कैसा होगा। आज, इन वर्षों के अनुभव के बाद मैं गर्व से कह सकती हूँ कि एमडीएल केवल एक कार्यस्थल नहीं, बल्कि एक ऐसी पाठशाला है जहाँ हर दिन धैर्य और अनुशासन का नया पाठ मिलता है।

एक महिला के लिए कार्यक्षेत्र और घर के बीच का संतुलन किसी कला से कम नहीं है। हम यहाँ केवल पद या दायित्व निभाने नहीं आतीं, बल्कि अपनी सूझबूझ और संवेदनशीलता से कार्य-परिवेश को बेहतर बनाने का प्रयास करती हैं। 'जलतरंग' का यह रजत पड़ाव उन सभी महिलाओं के साझा संघर्ष और सफलता का प्रतिबिंब है, जो पर्दे के पीछे रहकर भी संस्थान की सुदृढ़ व्यवस्था में अपना मौन योगदान देती हैं।

महिला दिवस के इस उपलक्ष्य में, मेरी यह कविता उन सभी सखियों को समर्पित है जो एमडीएल के गौरव को अपनी निष्ठा से सींच रही हैं:

किसी एक की जीत नहीं यह, यह सबका सम्मान है,

इस डॉकयार्ड की धड़कन में, छुपा नारी का प्राण है।

कभी संयम की मूरत बनकर, बाधाओं को पार किया,

कभी अपनी कार्यकुशलता से, हर पथ को उजियार किया।

रजत आभा 'जलतरंग' की, हम सबको आज जोड़ती,

वक्त की कठिन धाराओं को, संकल्पों से मोड़ती।

कोई पद छोटा-बड़ा नहीं, हर सेवा का मोल यहाँ,

हमारी निष्ठा और लगन ही, बनती अनमोल यहाँ।

नारी केवल नाम नहीं, वह त्याग और विश्वास है,

सृजन की इस महायात्रा का, वह सबसे खास अहसास है।

उज्जवल हो भविष्य सबका, यही मन में अभिलाषा है,

हमारी मेहनत ही असल में, एमडीएल की परिभाषा है!

'जलतरंग' के इस ऐतिहासिक 25वें अंक के अवसर पर, आइए हम सब मिलकर एक ऐसी कार्य-संस्कृति का निर्माण जारी रखें जहाँ सम्मान और सहयोग ही हमारी सबसे बड़ी शक्ति हो।

सभी सहकर्मियों को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस की आत्मीय शुभकामनाएँ।

एक लंबी छलाँग - कल की नींव और आज की ऊँचाई

श्री श्रीनिवास सिन्हा,
महाप्रबंधक (मा. सं. एवं राजभाषा)

**रजत आभा: स्मृतियों का लंगर और भविष्य के पल
(वर्ष 2014 से 2026: 'जलतरंग' के 25 अंकों की अविराम यात्रा)**

"जलतरंग का सफर 2014 में शुरू हुआ था। तब से लेकर आज तक, हमने हर 180 दिनों (छह महीने) की मेहनत को इन पन्नों में समेटा है। इन 25 अंकों में माझगाँव डॉक के लगभग हर विभाग की धड़कन शामिल है।

माझगाँव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड की विशाल गोदियों में जब विशालकाय पोतों और अत्याधुनिक पनडुब्बियों का निर्माण होता है, तो वह केवल इंजीनियरिंग का चमत्कार नहीं होता, बल्कि हजारों हाथों का साझा संकल्प और पसीना होता है। एक संपादक के नाते, मेरी दृष्टि हमेशा उस 'नींव' पर टिकी रही है, जिसने इस भव्यता को थामे रखा है। आज जब हमारी प्रिय गृह-पत्रिका 'जलतरंग' अपने 25वें अंक (रजत संस्करण) के सुनहरे पड़ाव पर खड़ी है, तो पीछे मुड़कर देखना किसी रोमांचक महागाथा के फ्लैशबैक जैसा लगता है। यह यात्रा केवल पन्नों की नहीं, बल्कि भावनाओं, विचारों और अटूट निरंतरता की है।

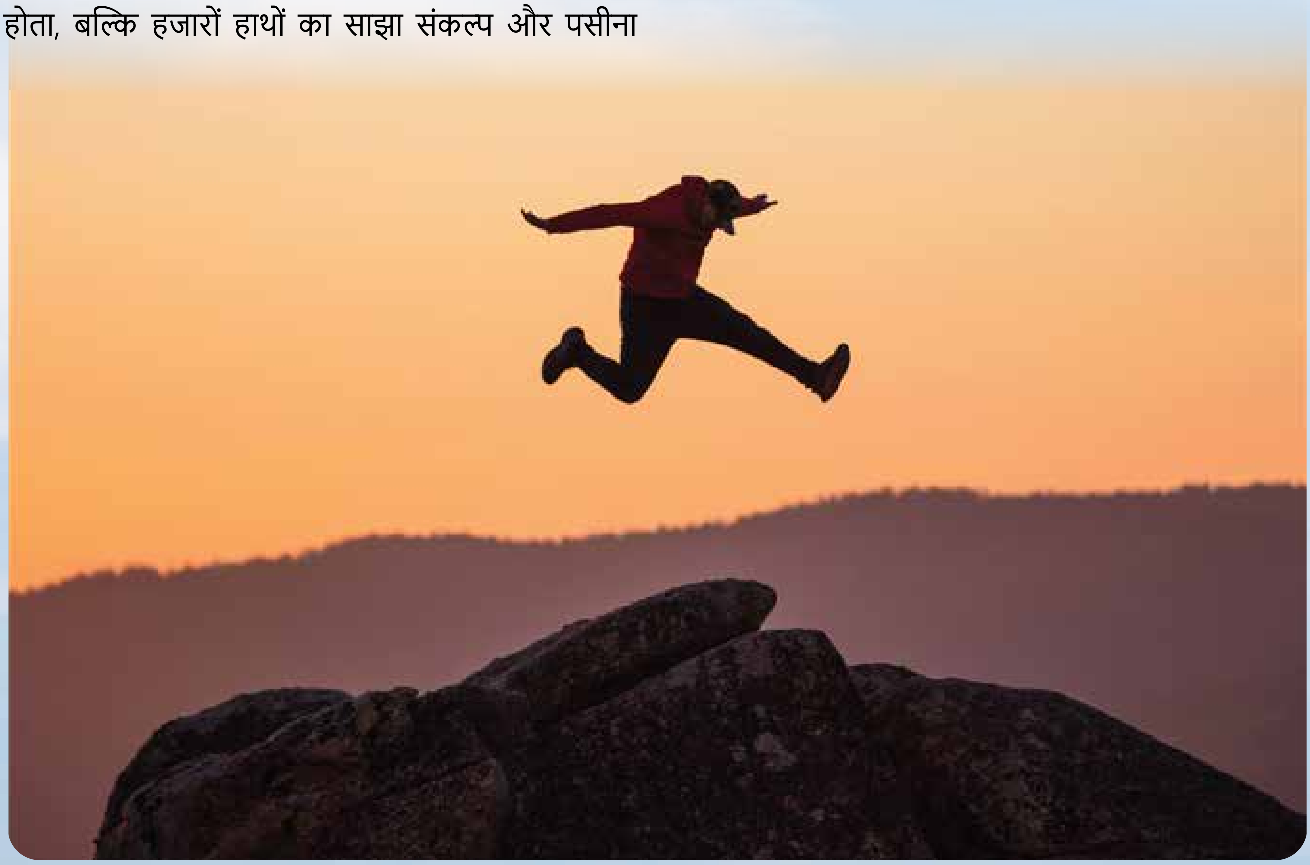

वर्ष 2014

मुझे आज भी धुंधली सी याद है वर्ष 2014 का वह बसंत, जब 'जलतरंग' के पहले अंक की रूपरेखा तैयार की जा रही थी। वह पत्रिका का शुरूआती दौर था। हमारे सामने चुनौती केवल एक पत्रिका निकालने की नहीं थी, बल्कि एक ऐसा मंच तैयार करने की थी जहाँ एक 'वेल्डर' से लेकर 'वरिष्ठ प्रबंधक' तक अपनी रचनात्मकता को साझा कर सकें। उस समय संसाधन सीमित थे और राजभाषा हिंदी को तकनीकी वातावरण में स्थापित करना एक दुर्गम कार्य जैसा प्रतीत होता था।

आज जब मैं उस प्रथम अंक को देखता हूँ, तो गर्व होता है कि हमने हर छह महीने (अर्धवार्षिक) में एक नई 'लहर' (अंक) पैदा करने का जो संकल्प लिया था, वह आज 12 वर्षों की अविराम यात्रा के बाद एक 'महासागर' बन चुका है। इन 25 अंकों में 'जलतरंग' ने माझगाँव डॉक के उतार-चढ़ाव, उसकी सफलताओं और उसकी गौरवशाली विरासत को अपने भीतर समेटा है।

इन

"कलम चली थी जब पहले अंक की खातिर,

मन में संशय था, पर संकल्प था साथ।

2014 की वह पहली छोटी सी लहर,

आज बन गई है खुशियों की सौगात।।"

25 अंकों के सफर के दौरान एमडीएल ने केवल जहाजों का निर्माण ही नहीं किया, बल्कि कामयाबी के नए आसमान को भी छुआ है। हमें गर्व है कि इसी यात्रा के दौरान हमारे संस्थान ने 'नवरत्न' का प्रतिष्ठित दर्जा प्राप्त किया। यह केवल एक सरकारी श्रेणी नहीं, बल्कि हमारी कार्यक्षमता, टीम वर्क और हर कर्मचारी के पसीने की जीत है। 'जलतरंग' ने इन 25 अंकों में हमारे 'नवरत्न' बनने की हर उस कड़ी और संघर्ष को बड़ी आत्मीयता से दर्ज किया है।

तकनीकी छलाँग

टाइपराइटर की 'टुक-टुक' से डिजिटल क्रांति तक वर्ष 2014 और 2026 के बीच तकनीक की एक पूरी सदी बीत गई है। संपादन का वह दौर मुझे आज भी याद है जब कंप्यूटर स्क्रीन पर हिंदी के फॉन्ट्स अक्सर 'डब्बे' बनकर रह जाते थे। प्रूफ-रीडिंग का अर्थ था - कागजों के ढेरों के बीच लाल पेन लेकर घंटों बैठना और कतरनों को सहेजकर ले-आउट तैयार करना। उस समय की 'मैन्युअल' मेहनत का अपना ही एक अलग आकर्षण था। हर सुधार के पीछे एक मानवीय स्पर्श होता था।

आज तकनीक ने एक लंबी छलाँग लगाई है। टाइपराइटर और शुरुआती सॉफ्टवेयर का स्थान अब स्लीक कीबोर्ड्स, क्लाउड कंप्यूटिंग और एआई (AI) आधारित अत्याधुनिक उपकरणों ने ले लिया है। अब सुधार 'बैकस्पेस' की एक क्लिक की दूरी पर है। लेकिन तकनीक के इस आधुनिक कलेवर के बीच, 'जलतरंग' की आत्मा वही है - अभिव्यक्ति की शुद्धता। तकनीक बदली है, पर शब्दों की वह ऊष्मा आज भी वही है जो पहले अंक में थी।

विरासत बनाम आधुनिकता

पुराने कलमकारों और नई ऊर्जा का संगम इस छमाही यात्रा के गलियारों में टहलते हुए कई ऐसे चेहरे याद आते हैं, जो 2014 में हमारे साथ इस सफर के सहयात्री थे और अब सेवानिवृत्त होकर अपनी दूसरी पारी खेल रहे हैं। वे पुराने लेखक, जो हाथ से लिखे कागजों के बंडल लेकर कार्यालय आते थे, उनकी लेखनी में एक अद्भुत ठहराव और अनुभव की गूँज थी। उन्होंने उस दौर में 'जलतरंग' की नींव रखी जब डिजिटल डिस्ट्रैक्शन कम था और पढ़ने की संस्कृति गहरी थी।

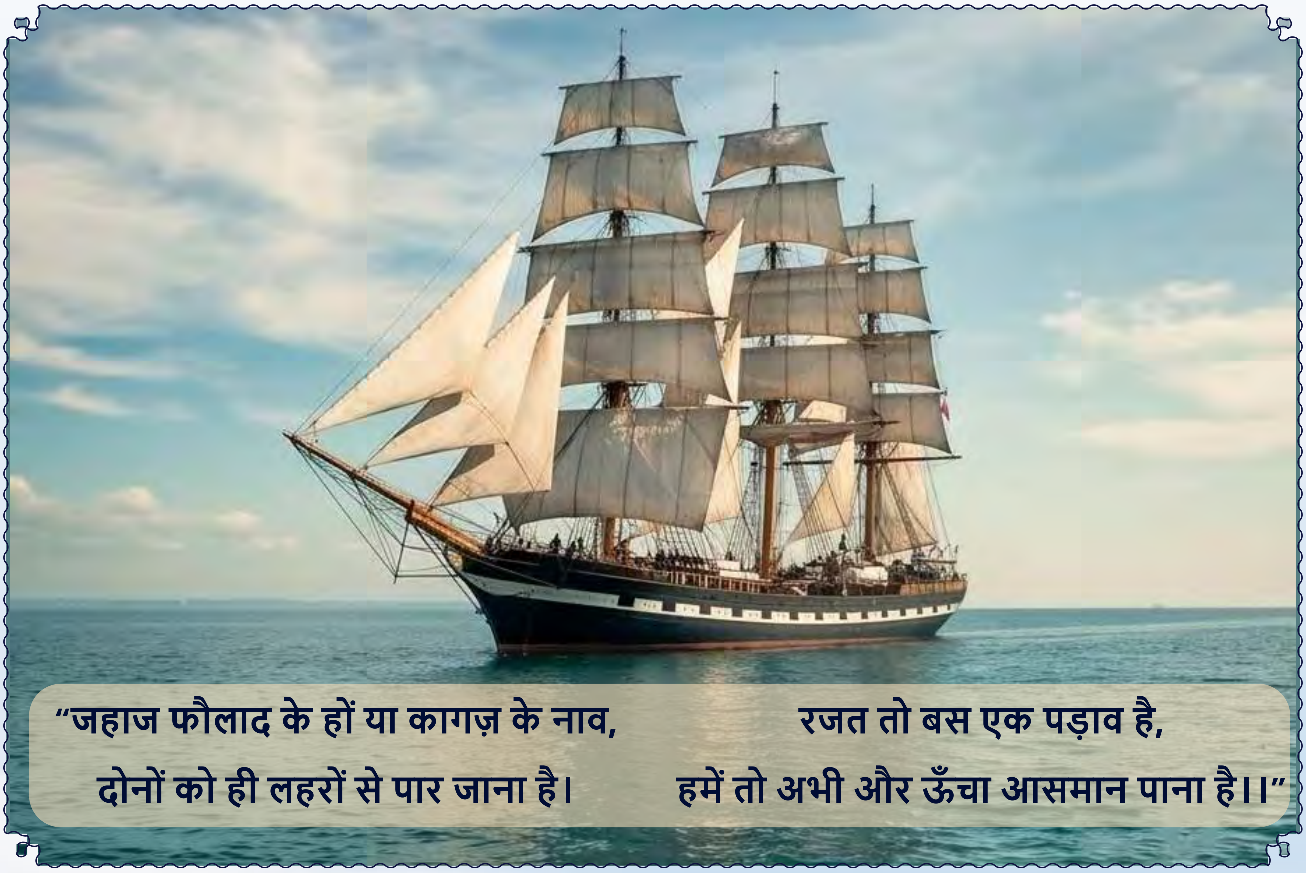

वहीं दूसरी ओर, जब मैं आज अपने युवा सहकर्मियों और नए भर्ती हुए अधिकारियों को देखता हूँ तो मेरा सीना गर्व से चौड़ा हो जाता है। नई पीढ़ी के पास 'डिजिटल पैनापन' है। उनके पास डेटा को कहानियों में बदलने का हुनर है और वे वैश्विक दृष्टिकोण के साथ हिंदी को एक वैश्विक भाषा के रूप में देखते हैं। जहाँ पुराने लेखकों ने हमें 'परंपरा और गहराई' दी, वहीं इन युवाओं ने हमें 'आधुनिकता और गति' दी है। 'जलतरंग' का यह 25वाँ अंक इसी गौरवशाली परंपरा और अदम्य आधुनिकता के खूबसूरत संगम का गवाह है।

माझगाँव डॉक की धड़कन और साहित्य का मेल अक्सर लोग पूछते हैं कि एक भारी उद्योग में साहित्य और कविता की क्या प्रासंगिकता है? मेरा जवाब हमेशा यही होता है- जहाँ लोहा ढलता है, वहाँ भावनाओं का पिघलना भी अनिवार्य है। जिस तरह एक मजबूत जहाज के लिए उत्तम दर्जे का इस्पात चाहिए, उसी तरह एक जीवंत संस्थान के लिए उत्तम दर्जे के विचार चाहिए। 'जलतरंग' ने इन 25 अंकों के माध्यम से यह सिद्ध किया है कि शिपबिल्डर्स केवल मशीनें नहीं चलाते, वे कलम भी उतनी ही कुशलता से चलाते हैं। यह पत्रिका हमारे कर्मियों के मानसिक विश्राम का केंद्र रही है।

संकल्प नए क्षितिज का परिवर्तन संसार का शाश्वत नियम है, लेकिन वास्तविक विकास वही है जो अपनी जड़ों को न भूले। माझगाँव डॉक ने जैसे लकड़ी के छोटे जहाजों से लेकर आज के अत्याधुनिक स्टील्थ विध्वंसक (Destroyers) और उन्नत पनडुब्बियों तक का सफल सफर तय किया है, वैसे ही 'जलतरंग' ने भी 2014 के अपने साधारण स्वरूप से लेकर आज के इस चमकदार रजत अंक तक की लंबी छलाँग लगाई है।

यह 25वाँ अंक केवल एक संख्यात्मक उपलब्धि नहीं है, बल्कि पिछले 12 वर्षों के हमारे सामूहिक परिश्रम, धैर्य और संकल्प की विजय है। हम कल भी शब्दों के साथ खड़े थे, हम आज भी विचारों के साथ खड़े हैं और आने वाले कल में भी 'जलतरंग' का प्रवाह इसी तरह निरंतर बना रहेगा। नींव मजबूत थी, इसीलिए आज हम इस ऊँचाई पर खड़े होकर भविष्य के नए क्षितिज देख रहे हैं। आइए, इस रजत के अवसर पर हम शब्द और शिल्प की इस साधना को आगे बढ़ाने का पुन: संकल्प लें।

संरक्षित भविष्य की ओर सुदृढ़ कदम - 55वाँ राष्ट्रीय संरक्षा सप्ताह

श्री बिरेन्द्र सिंह यादव,
मुख्य प्रबंधक (जनि - संरक्षा)

माझगाँव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड में 'सुरक्षा' केवल एक नियम नहीं, बल्कि हमारी कार्य-संस्कृति का एक अभिन्न अंग है। प्रत्येक वर्ष की भाँति, इस वर्ष भी जहाज निर्माण (संरक्षा अनुभाग) द्वारा 55वाँ राष्ट्रीय संरक्षा सप्ताह अत्यंत उत्साह और अटूट प्रतिबद्धता के साथ मनाया गया। दिनांक 4 मार्च 2026 से 10 मार्च 2026 तक चले इस विशेष सप्ताह का मुख्य उद्देश्य कार्यस्थल पर 'शून्य हानि' के लक्ष्य को प्राप्त करना और प्रत्येक कर्मचारी के भीतर संरक्षा को एक संस्कार के रूप में विकसित करना था।

इस वर्ष की थीम "Engage, Educate & Empower People to Enhance Safety" पर आधारित रही, जिसने कर्मचारियों को सुरक्षा के प्रति जागरूक करने के साथ-साथ उन्हें सशक्त बनाने पर भी बल दिया।

सप्ताह के मुख्य आकर्षण: जागरूकता और प्रशिक्षण

सप्ताह के दौरान कई संवादात्मक और शिक्षाप्रद कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जिनका विवरण निम्न है:

नुक्कड़ नाटक

मनोरंजन के साथ गंभीर संदेश - कर्मचारियों की एक टीम

द्वारा 'काम से पहले संरक्षा' विषय पर एक मर्मस्पर्शी नाटक प्रस्तुत किया गया। इस नाटक ने दिखाया कि कैसे एक छोटी सी लापरवाही बड़े हादसे का कारण बन सकती है। अभिनय के माध्यम से सुरक्षा के संदेश को भावनात्मक रूप से सभी के दिलों तक पहुँचाया गया।

गहन संरक्षा प्रशिक्षण सत्र

तकनीकी कौशल और आपातकालीन तैयारी को बढ़ाने के लिए विशेष सत्र आयोजित किए गए, जिनमें निम्नलिखित विषयों पर चर्चा हुई:

- ऊँचाई पर सुरक्षित कार्य करने के नियम।
- सीमित स्थान में कार्य की सावधानियाँ।
- अग्नि सुरक्षा और अग्निशामक यंत्रों का संचालन।
- प्राथमिक चिकित्सा का व्यवहारिक अभ्यास और जोखिम मूल्यांकन।

रचनात्मक अभिव्यक्ति:

त्रिभाषी स्लोगन प्रतियोगिता - संरक्षा संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए कर्मचारियों की रचनात्मकता को भी मंच प्रदान किया गया। इस अवसर पर हिंदी, मराठी और अंग्रेजी भाषाओं में एक 'स्लोगन प्रतियोगिता' का भव्य आयोजन किया गया। कर्मचारियों ने अपनी लेखनी के माध्यम से सुरक्षा के महत्व को रेखांकित किया।

प्रतियोगिता का परिणाम और पुरस्कार वितरण

सप्ताह के समापन समारोह के दौरान, जिसकी अध्यक्षता अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक द्वारा की गई, इन प्रतियोगिताओं के विजेताओं की घोषणा की गई। सुरक्षा के प्रति उनकी इस रचनात्मक सजगता की सराहना की। उनके प्रेरक उद्बोधन ने सभी कर्मचारियों में सुरक्षा को प्राथमिकता देने के संकल्प को और सुदृढ़ किया।

सतर्कता : अपने आसपास के संभावित खतरों को पहचानना और उन्हें तुरंत रिपोर्ट करना।

पारस्परिक देखभाल : सहकर्मियों को असुरक्षित कार्य करते देख उन्हें टोकना और सही तरीका बताना।

नियमों के प्रति सम्मान : संरक्षा प्रक्रियाओं को बोझ न मानकर उन्हें जीवन रक्षक प्रणाली के रूप में स्वीकारकरना।

"संरक्षा से समझौता, दुखों को न्योता।"

55वें राष्ट्रीय संरक्षा सप्ताह के समापन पर एमडीएल परिवार ने यह संकल्प लिया कि संरक्षा केवल एक सप्ताह का कार्यक्रम नहीं, बल्कि हमारे दैनिक जीवन का अभिन्न हिस्सा है। "संरक्षा से समझौता, दुखों को न्योता" - इसी विचार के साथ हम एक सुरक्षित, स्वस्थ और समृद्ध कार्य वातावरण के निर्माण हेतु निरंतर प्रयासरत रहेंगे।

संरक्षा संस्कृति की विशेषताएँ

एक मजबूत संरक्षा संस्कृति केवल नियमों का पालन करने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक सोच और व्यवहार है। इसकी मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:

व्यक्तिगत जिम्मेदारी : सुरक्षा केवल संरक्षा अधिकारी का काम नहीं, बल्कि हम सबकी व्यक्तिगत जिम्मेदारी है।

माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लि

नींव और प्रारंभिक उपलब्धियां (1774-1992)

1774
एक छोटी गोदी के रूप में सफर की शुरुआत।

1934
एक निजी कंपनी के रूप में स्थापना।

1960
भारत सरकार द्वारा अधिग्रहित।

1972
आई.एन.एस नीलगिरी, पहली फ्रिगेट की सुपुर्दगी।

1984
पनडुब्बी निर्माण उपक्रम का उद्घाटन।

1992
भारत निर्मित पहली पनडुब्बी आई.एन.एस शाल्की की कमीशनिंग।

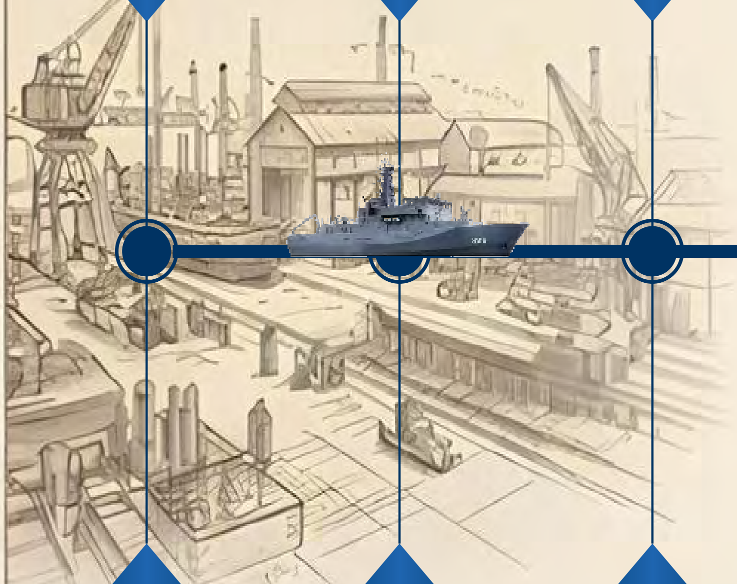

1997
पहले विध्वंसक पोत आई.एन.एस दिल्ली की कमीशनिंग।

1998
शिपबिल्डिंग के लिए आई.एस.ओ सर्टिफिकेशन के साथ मान्यता प्राप्त।

2000
शेड्यूल बी से शेड्यूल ए में अपग्रेड

2006
मिनीरत्न श्रेणी -1 स्टेटस से सम्मानित

2009
इंटरप्राइज रिसोर्स प्लानिंग और सिस्टम एकीकरण और उपयोग का कार्यान्वयन।

2010
परियोजना पी 17 के अंतर्गत पहली शिवालिक श्रेणी फ्रिगेट की सुपुर्दगी।

शक्ति और सामर्थ्य का निर्माण (1997-2010)

लिमिटेड की गौरवशाली यात्रा

आधुनिकीकरण और विकास (2014-2020)

2014
★ माझगांव डॉक आधुनिकीकरण परियोजना का उद्घाटन।
★ परियोजना पी 15 ए के अंतर्गत कोलकाता श्रेणी के डिस्ट्रॉयर की सुपुर्दगी।

2015
★ MOD के साथ पनडुब्बी के निर्माण और वितरण के लिए अनुबंध पर हस्ताक्षर।
★ परियोजना पी 15 बी के अंतर्गत विशाखापत्तनम श्रेणी डिस्ट्रॉयर की लॉन्चिंग।

2016
एल्कॉक यार्ड में नया सेक्शन असेंबली वर्कशॉप का उद्घाटन।

2017
पहली पी 75 स्कॉर्पीन श्रेणी पनडुब्बी आई.एन.एस कलवरी की डिलीवरी एवं कमीशनिंग।

2019
★ दूसरी पी 75 स्कॉर्पीन श्रेणी पनडुब्बी आई.एन.एस खांदेरी की डिलीवरी एवं कमीशनिंग।
★ परियोजना पी 17 के अंतर्गत पहली फ्रिगेट नीलगिरी की लॉन्चिंग।

2020
बी.एस.ई. (BSE) एन.एस.ई. (NSE) में MDL शेयर की लिस्टिंग।

2021
★ पी 75 श्रेणी की चौथी एवं पांचवी पनडुब्बी आई.एन.एस करंज एवं आईएनएस वेला की डिलीवरी एवं कमीशनिंग।
★ पहली मिसाइल विध्वंसक पोत की डिलीवरी।

2022
★ पी 75 श्रेणी की छठी पनडुब्बी वागशीर की लॉन्चिंग।
★ पी 15 बी के विशाखापट्टनम श्रेणी के विध्वंसक आई.एन.एस सूरत की लॉन्चिंग।
★ परियोजना पी 17 के अंतर्गत नीलगिरी श्रेणी फ्रिगेट के दूसरे एवं तीसरे जहाज, उदयगिरी एवं तारागिरी की लॉन्चिंग।

2023
★ चौथी स्टील्थ फ्रिगेट प्रोजेक्ट पी 17 ए आई.एन.एस महेंद्रगिरी की लॉन्चिंग।
★ तीसरे विध्वंसक आई.एन.एस इंफाल की डिलीवरी।

2024
★ सार्वजनिक उद्यम विभाग द्वारा नवरत्न का दर्जा प्राप्त किया।
★ नीलगिरी (पी 17 ए) का पहला फ्रिगेट और सूरत (पी 15 बी) का चौथा विध्वंसक की डिलीवरी।

2025
★ वागशीर (पी 75 की छठी पनडुब्बी) की डिलीवरी।
★ डी 1148 (उदयगिरी) की डिलीवरी।

2026
★ कोलंबो शिपयार्ड का एमडीएल में विलय
★ स्वदेशी रूप से निर्मित स्टील्थ फ्रिगेट आईएनएस तारागिरी की सुपुर्दगी

आत्मनिर्भर भारत की ओर बढ़ते कदम (2021 से निरंतर...)

स्वच्छता पखवाड़ा 2025

श्रीमती लीना संदीप माली,
प्रबंधक (मा. सं. - समवाय)

भारत सरकार के 'स्वच्छ भारत मिशन' के आह्वान पर, माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड ने इस वर्ष भी 'स्वच्छता पखवाड़ा' का आयोजन अत्यंत उत्साह और समर्पण के साथ किया। 17 सितंबर 2025 से 02 अक्टूबर 2025 तक चले इस पखवाड़े का मुख्य उद्देश्य न केवल कार्यस्थल को साफ रखना था, बल्कि समाज के प्रति अपने उत्तरदायित्व को निभाते हुए स्वच्छता को एक संस्कार के रूप में स्थापित करना था।

'नवरत्न' कंपनी के रूप में एमडीएल ने यह सिद्ध किया है कि उत्कृष्ट जहाज निर्माण के साथ-साथ हम एक स्वच्छ और स्वस्थ भारत के निर्माण में भी अग्रणी हैं।

अभियान का शुभारंभ: सीएमडी महोदय के नेतृत्व में स्वच्छता शपथ

पखवाड़े का भव्य आगाज़ 17 सितंबर 2025 को हुआ।

एमडीएल के माननीय अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक महोदय के ओजस्वी नेतृत्व में 'स्वच्छता शपथ' समारोह का आयोजन किया गया। सीएमडी महोदय ने स्वयं उपस्थित रहकर समस्त अधिकारियों, कर्मचारियों और प्रशिक्षुओं को स्वच्छता की शपथ दिलाई।

अपने संबोधन में उन्होंने जोर देकर कहा कि "स्वच्छता केवल एक दिन का कार्यक्रम नहीं, बल्कि यह हमारी कार्यशैली का अभिन्न हिस्सा होना चाहिए।" उनके नेतृत्व में ली गई इस शपथ ने पूरे संस्थान में ऊर्जा का संचार किया और हर कर्मचारी ने प्रतिवर्ष 100 घंटे श्रमदान करने का दृढ़ संकल्प लिया।

एमडीएल परिसर और आसपास के क्षेत्रों में व्यापक सफाई ड्राइव :

इस पखवाड़े की सबसे महत्वपूर्ण कड़ी 'श्रमदान' रही। केवल कार्यालय के भीतर ही नहीं, बल्कि एमडीएल परिसर के बाहरी क्षेत्रों और आसपास की बस्तियों में भी व्यापक सफाई अभियान चलाया गया।

सड़क और फुटपाथ की सफाई : कर्मचारियों ने स्वैच्छिक रूप से मुख्य द्वारों के आसपास की सड़कों और फुटपाथों से कचरा साफ किया।

प्लास्टिक मुक्त परिसर : एकल-उपयोग प्लास्टिक के खिलाफ एक विशेष मुहिम चलाई गई, जिसके तहत भारी मात्रा में प्लास्टिक कचरा एकत्र कर उसका सुरक्षित निस्तारण किया गया।

जन-जागरूकता : सफाई करते हुए एमडीएल के जांबाजों ने स्थानीय नागरिकों को भी अपने आसपास सफाई बनाए रखने के लिए प्रेरित किया। इस अभियान ने न केवल परिसर को सुंदर बनाया बल्कि बाहरी समाज में स्वच्छता का एक सकारात्मक संदेश भी प्रसारित किया।

कला के माध्यम से संदेश: स्वच्छता पर आधारित नुक्कड़ नाटक संवाद का सबसे सशक्त माध्यम कला है। इसी विचार को धरातल पर उतारते हुए पखवाड़े के दौरान एक प्रभावशाली नुक्कड़ नाटक की प्रस्तुति दी गई। एमडीएल के कलाकारों द्वारा मंचित इस नाटक में यह दिखाया गया कि कैसे छोटी-छोटी लापरवाहियां हमारे पर्यावरण को प्रदूषित करती हैं और कैसे एक जागरूक नागरिक बनकर हम बीमारियों को दूर भगा सकते हैं।

नाटक के माध्यम से 'कचरा पृथक्करण' (सूखा और गीला कचरा) और प्लास्टिक के खतरों पर कड़ा प्रहार किया गया। नाटक को दर्शकों की भरपूर सराहना मिली और इसने लोगों के दिलों में स्वच्छता के प्रति एक गहरी संवेदना जगाई।

विभिन्न गतिविधियाँ और प्रतियोगिताएं

17 सितंबर से 02 अक्टूबर के बीच अन्य कई कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया:

1. वृक्षारोपण : 'एक पेड़ माँ के नाम' और हरित परिसर की अवधारणा को बढ़ावा देते हुए विभिन्न स्थानों पर पौधे लगाए गए।

2.चित्रकला और निबंध प्रतियोगिता : प्रशिक्षुओं और कर्मचारियों के बच्चों के लिए स्वच्छता विषयों पर प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं।

3.पुरानी फाइलों का निस्तारण : कार्यालयों में अनावश्यक पुराने रिकॉर्ड्स को हटाकर स्थान प्रबंधन किया गया।

4.मिनी मैराथन : 450 प्रशिक्षुओं ने इस मैराथन में दौड़ लगाकर स्वच्छता का संदेश जन-जन तक पहुँचाया। विजेताओं को पुरस्कृत कर उनका उत्साहवर्धन किया गया।

इस पखवाड़े का समापन 02 अक्टूबर 2025 को महात्मा गांधी की जयंती के अवसर पर हुआ। इस समापन समारोह में पखवाड़े की विभिन्न गतिविधियों की समीक्षा की गई और उत्कृष्ट योगदान देने वाले विभागों व कर्मचारियों को सम्मानित किया गया।

'जलतरंग' के इस रजत जयंती अंक के माध्यम से हम यह संदेश देना चाहते हैं कि स्वच्छता की यह मशाल पखवाड़े के बाद भी बुझनी नहीं चाहिए। सीएमडी महोदय के कुशल मार्गदर्शन में एमडीएल परिवार यह विश्वास दिलाता है कि हम अपने "स्वच्छ एमडीएल, श्रेष्ठ एमडीएल" के लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु निरंतर कार्यरत रहेंगे।

स्वच्छता ही सेवा है!

जय हिन्द!

जलतरंग:
पच्चीस सोपानों का गौरव-गान

श्री संदीप दुबे,
अनुवादक (राजभाषा)

माझगांव की लहरों से उठा, एक स्वर पावन अनमोल है,
शब्दों के शिल्प से गढ़ा, यह 'जलतरंग' का बोल है|
पच्चीस पड़ाव पार किए, गौरव की एक कहानी है,
यह केवल पत्रिका नहीं, हमारी प्रगति की निशानी है।

शून्य से शुरू हुआ सफर, अब शिखर चूमने आया है,
रजत अंक के अवसर पर, नया सवेरा छाया है।
हर अंक एक नया साक्ष्य था, हमारी बढ़ती शक्ति का,
यह संगम है तकनीकी ज्ञान और राष्ट्र-भक्ति का।

कभी 'नीलगिरी' की गूँज बनी, कभी 'शल्की' का अभिमान रही,
राष्ट्र-रक्षा के संकल्पों की, यह सजग और जीवंत प्रमाण रही।
जल के भीतर, जल के ऊपर, जो पराक्रम हमने दिखाया है,
'जलतरंग' के हर पन्ने ने, उसे शब्दों में सजाया है।

राजभाषा की मर्यादा का, इसने सदा मान बढ़ाया है,
प्रशासन और साहित्य का, सुंदर मेल बिठाया है।
अनुवाद की बारीकियों से, अभिव्यक्ति को विस्तार दिया,
कर्मठता और सृजनशीलता को, एक नया आधार दिया।

मजदूरों के पसीने से, जो युद्धपोत आकार लेते हैं,
उन मजबूत हाथों को भी, हम यहाँ सम्मान देते हैं।
कलम और हथौड़े का, यह रिश्ता बड़ा पुराना है,
देश की जल-सीमाओं को, हमें अभेद्य बनाना है।

इतिहास के झरोखों से, भविष्य को आज निहारें हम,
रजत आभा की इस चमक से, नया मार्ग संवारें हम।
स्वर्णिम कल की ओर बढ़ें, लेकर नया विश्वास हम,
लिखेंगे अपने हाथों से, फिर एक नया इतिहास हम।

उपलब्धियों

आईएनएस कलवरी की कमीशनिंग करते हुए माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के साथ महाराष्ट्र के मुख्य मंत्री श्री देवेंद्र फडनविस, नौसेना प्रमुख (पश्चिम) एडमिरल सुनील लांबा, माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक कमोडोर राकेश आनन्द

पुरस्कार प्राप्त करते समय बाएँ से खड़े श्री अनूपकुमार श्रीवास्तव, निदेशक राजभाषा, श्री राजनाथ सिंह, गृह मंत्री, श्री प्रणब कुमार मुखर्जी, राष्ट्र… श्री किरण रिजीजू (गृह राज्य मंत्री) रियर एडमिरल आर के श्रावत, सीएमडी, एमडीएल, डॉ बिपिन बिहारी - सचिव राजभाषा।

एमडीएल ने देश की सेवा में गौरवपूर्ण 250 वर्ष पूरा करने के उपलक्ष्य में स्मारक सिक्का जारी किया। कार्यक्रम में उपस्थित मुख्य अतिथि श्री गिरिधर अरमाने, आईएएस, रक्षा सचिव के साथ एमडीएल के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक और नौसेना के वरिष्ठ अधिकारीगण।

28 सितम्बर 2019 को एमडीएल की हेरिटेज गैलरी का उद्घाटन करते हुए माननीय रक्षामंत्री श्री राजनाथ सिंह साथ में भारी उद्योग मंत्री श्री अरविंद सावंत तथा एमडीएल के सीएमडी के साथ अन्य अधिकारीगण

लोक उद्यम विभागों में सर्वश्रेष्ठ नियोक्ता का राष्ट्रीय पुरस्कार माझगाँव डॉक लिमिटेड को विकलांग जन सशक्तिकरण हेतु महामहिम राष्ट्रपति से दिनांक 3-12-2014 को कंपनी के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक रियर एडमिरल आर.के. श्रावत विज्ञान भवन, नई दिल्ली में आयोजित शानदार समारोह में प्राप्त करते हुए।

माननीय रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह जी को पी17ए की द्वितीय स्टील्थ युद्धपोत 'उदयगिरी' के जलावतरण के अवसर पर वाईस एडमिरल नारायण प्रसाद, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक द्वारा एमडीएल स्मृतिचिन्ह से सम्मानित करते हुए

के स्वर्णिम पल

दिनांक 31.10.2025 को माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड ने भारतीय नौसेना के वॉरशिप डिज़ाइन ब्यूरो द्वारा डिज़ाइन किए गए 100वें युद्धपोत और माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड द्वारा निर्मित आईएनएस उदयगिरी की कमीशिनिंग के उपलक्ष्य में एमडीएल के मुंबई परिसर में 'नमन' कार रैली की मेजबानी की। इस अवसर पर अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक कैप्टन जगमोहन

माननीय रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह द्वारा आईएनएस मोरमुगाओ की भारतीय नौसेना को कमीशनिंग

माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र दामोदर मोदी को दिनांक 15 अगस्त, 2014 को एमडीएल फलक प्रदान करते हुए माझगाँव डॉक के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक रियर एडमिरल आर.के. शावत, साथ में नौसेना प्रमुख एडमिरल आर.के. धोवन।

26 दिसंबर 2023 को माननीय रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह द्वारा आईएनएस इम्फाल की भारतीय नौसेना को कमीशनिंग।

दिनांक 06 अप्रैल 2015 को परियोजना 75 श्रेणी की प्रथम पनडुब्बी की अनडॉकिंग समारोह में उपस्थित बाएं से कैप्टन राजीव लठ,निदेशक(पनडुब्बी एवं भारी अभियांत्रिकी),रियर एडमिरल आर के शावत,अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक,माननीय रक्षा मंत्री श्री मनोहर परीकर, माननीय मुख्य मंत्री श्री देवेंद्र फडणवीस एवं अन्य नौसेना अधिकारीगण।

30 मई 2017 को रक्षा मंत्री, श्री अरुण जेटली से वर्ष 2014-15 के लिए "बेस्ट एक्सिलेंस" पुरस्कार प्राप्त करते हुए कमोडोर राकेश आनन्द, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक तथा श्री संजीव शर्मा, निदेशक (वित्त)

दिनांक 26.08.2025 को आईएनएस उदयगिरी की कमीशनिंग के अवसर पर उपस्थित माननीय रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक कैप्टन जगमोहन एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण।

श्रीमती शुभ्रा सिन्हा,
प्रबंधक (राजभाषा)

कार्यालयीन कामकाज में सरल हिंदी का प्रयोग

"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा-ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।।"

भारतेन्दु हरिश्चंद्र

किसी भी गतिशील राष्ट्र की सफलता उसकी प्रभावी संचार व्यवस्था पर निर्भर होती है। भाषा केवल संवाद का साधन नहीं, बल्कि प्रशासन और जनता के बीच की कड़ी होती है। आज जब हमारी गृह-पत्रिका 'जलतरंग' अपने 25वें (रजत) अंक के पड़ाव पर खड़ी है, तो यह हमारे इसी संवाद और साझा प्रयासों का एक गौरवशाली प्रतीक है। 25 अंकों का यह सफल सफर हमें याद दिलाता है कि हमारी अभिव्यक्ति जितनी सरल और सुबोध होगी, हमारा जुड़ाव उतना ही गहरा होगा। पच्चीस अंकों का यह सफल सफर केवल पन्नों का संकलन नहीं है, बल्कि यह संस्थान की कार्य-संस्कृति और हमारे विचारों की निरंतरता का प्रमाण है। यह ऐतिहासिक मील का पत्थर हमें पुनः याद दिलाता है कि हमारी अभिव्यक्ति जितनी सरल, स्पष्ट और सुबोध होगी, आपसी जुड़ाव और कार्य-प्रवाह उतना ही गहरा होगा। इसी परिप्रेक्ष्य में, राजभाषा हिंदी का सरल प्रयोग न केवल एक प्रशासनिक आवश्यकता है, बल्कि हमारे संगठनात्मक संवाद को सशक्त बनाने का आधार भी है।

हिंदी, जो भारत की सर्वाधिक बोली, समझी और लिखी जाने वाली भाषा है, हमारी सांस्कृतिक विविधता को एक सूत्र में पिरोने का कार्य करती है। 14 सितंबर 1949 को भारत की

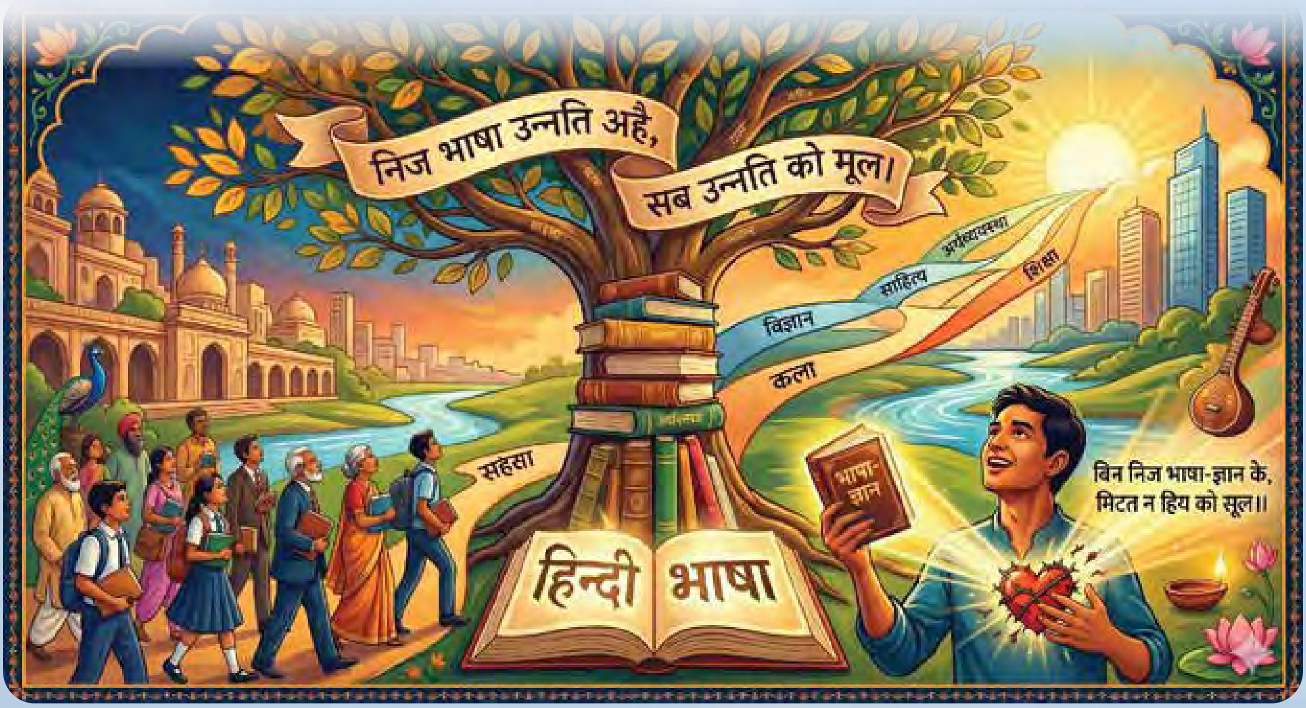

संविधान सभा ने इसे संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया था।

हिंदी को राजभाषा का दर्जा देने के पीछे का मुख्य उद्देश्य यह था कि सरकारी कामकाज उस भाषा में हो जिसे देश का एक सामान्य नागरिक भी सहजता से समझ सके। यदि सरकारी आदेश और नीतियां आम आदमी की समझ से परे होंगी, तो सुशासन का लक्ष्य प्राप्त करना कठिन होगा। अतः, राजभाषा हिंदी को सरल, सुबोध और व्यावहारिक बनाना आज के समय की सबसे बड़ी प्रशासनिक आवश्यकता है।

संवैधानिक चेतना और अनुच्छेद 351 का संकल्प

हमारे संविधान निर्माताओं ने हिंदी को एक ऐसी भाषा के रूप में देखा था जो निरंतर विकसित होती रहे। संविधान के अनुच्छेद 351 में संघ को यह विशेष निर्देश दिया गया है कि वह हिंदी का प्रसार करे और इसका विकास इस प्रकार करे कि वह भारत की मिली-जुली संस्कृति संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके।

इस अनुच्छेद की मूल भावना यही है कि हिंदी अपनी मूल प्रकृति को खोए बिना अन्य भारतीय भाषाओं जैसे मराठी, गुजराती, बंगाली, पंजाबी और दक्षिण भारतीय भाषाओं के शब्दों को आत्मसात करे। दुर्भाग्यवश, समय के साथ कार्यालयों में एक ऐसी 'कृत्रिम हिंदी' का जन्म हुआ जो कठिन शब्दावली और बोझिल अनुवाद से दबी हुई है। इस जटिलता को दूर कर हिंदी को वापस 'जन-भाषा' की ओर ले जाना ही हमारा संवैधानिक दायित्व है।

कठिन शब्दावली

अक्सर देखा गया है कि कार्यालयों में बुद्धिमता दिखाने के मोह में अत्यधिक संस्कृतनिष्ठ और कठिन शब्दों का प्रयोग किया जाता है। यह प्रवृत्ति हिंदी के स्वाभाविक विकास में सबसे बड़ी रुकावट है। राजभाषा का उद्देश्य कार्य को स्पष्ट करना होना चाहिए, न कि उसे उलझाना।

जब कोई कर्मचारी सरकारी पत्र पढ़ते समय शब्दों के अर्थ ढूँढने में ही उलझ जाए, तो वह संदेश अपना प्रभाव खो देता है। यदि हम अपनी बात को 'स्वीकृति के लिए' सरलता से कह सकते हैं, तो वहाँ 'अनुमोदनार्थ' जैसे भारी-भरकम शब्द का प्रयोग अनिवार्य नहीं होना चाहिए। भाषा तो बहती नदी की तरह है, इसे व्याकरण और कठिन शब्दों के पत्थरों से इतना नहीं बांधना चाहिए कि इसका प्रवाह ही रुक जाए।

कठिन शब्दों का सरलीकरण

सरकारी कामकाज में भाषा का चयन न केवल आपके कार्य को दर्शाता है, बल्कि यह आपके दृष्टिकोण को भी स्पष्ट करता है। हमें 'अलंकारिक' हिंदी के बजाय 'असरदार' हिंदी पर ध्यान देना चाहिए। यहाँ कुछ ऐसे व्यावहारिक उदाहरण दिए गए हैं जिन्हें अपनाकर हम अपनी फाइलों को बहुत

आसान बना सकते हैं :

- 'अनुमोदन' के स्थान पर 'मंजूरी' का प्रयोग किया जा सकता है (जैसे : 'फाइल मंजूरी के लिए प्रस्तुत है')।
- 'क्रियान्वयन' के स्थान पर 'लागू करना' अधिक प्रभावी है।
- 'यथोचित' जैसे शब्दों के स्थान पर 'उचित' या 'जैसा ठीक हो' लिखना बेहतर है।
- 'अतिशीघ्र' की जगह 'तुरंत' या 'जल्द से जल्द' का प्रयोग करें।
- 'सम्प्रति' जैसे कठिन शब्द के स्थान पर 'अभी' या 'वर्तमान में' लिखें।
- 'विलंब' की जगह 'देरी' शब्द का उपयोग अधिक सहज होता है।
- कुछ शब्द कानूनी कागजों तक ही सीमित रहने चाहिए:
- 'आख्या' की जगह 'रिपोर्ट' या 'विवरण' लिखें।
- 'अभिरक्षा' के स्थान पर 'देखरेख' या 'कस्टडी' का प्रयोग करें।
- 'जटिल' प्रक्रिया को 'मुश्किल' या 'पेचीदा' कहना अधिक व्यावहारिक है।

अनुवाद की चुनौतियां और 'भावानुवाद' की कला

कार्यालयों में हिंदी के कठिन होने का एक प्रमुख कारण अंग्रेजी से किया जाने वाला सीधा शाब्दिक अनुवाद है। सरकारी नीतियां और संकल्प अक्सर अंग्रेजी में तैयार होते हैं। जब उनका अनुवाद किया जाता है, तो अनुवादक भाव को समझने के बजाय डिक्शनरी से कठिन शब्दों को जस का तस रख देते हैं। इससे वाक्य इतने लंबे और घुमावदार हो जाते हैं कि उनका मूल अर्थ ही खो जाता है।

हमें अंग्रेजी के वाक्यों को छोटे-छोटे हिंदी वाक्यों में तोड़ने की आदत डालनी होगी। 'सरल हिंदी' का अर्थ व्याकरण का त्याग करना नहीं, बल्कि उसे लचीला बनाना है। इसलिए फाइलों में भाषा को सीधा और सरल ही रखना चाहिए।

डिजिटल युग और आधुनिक तकनीक का लाभ

आज के डिजिटल और गतिशील परिवेश में सरकारी कामकाज की गति कई गुना बढ़ गई है। कंप्यूटर और मोबाइल पर हिंदी के उपयोग के लिए आज कई बेहतरीन सॉफ्टवेयर, एआई टूल्स, और वॉयस टाइपिंग की सुविधाएं उपलब्ध हैं। अब हिंदी में काम करना टाइपिंग की समस्या के कारण नहीं रुकना चाहिए।

डिजिटल युग में अंग्रेजी और तकनीकी शब्दों का प्रभाव बढ़ा

है, जिसे पूरी तरह नकारा नहीं जा सकता और न ही इसकी आवश्यकता है। 'कंप्यूटर', 'इंटरनेट', 'पासवर्ड', 'लॉग-इन', 'फाइल' जैसे शब्दों का हिंदी अनुवाद ढूँढने के बजाय उन्हें देवनागरी लिपि में इसी तरह लिख देना ही सरलता की ओर बढ़ा कदम है। इससे लिखने और पढ़ने वाले, दोनों का कीमती समय बचता है।

क्षेत्रीय भाषाएँ :

हिंदी को और अधिक समृद्ध और व्यापक बनाने के लिए इसे अन्य भारतीय भाषाओं के साथ निरंतर तालमेल बैठाना होगा। भारत की भाषाई विविधता इसकी शक्ति है। यदि हम हिंदी में मराठी, गुजराती, पंजाबी, बंगाली और दक्षिण भारतीय भाषाओं के उन शब्दों को शामिल करते हैं जो आम बोलचाल में खूब प्रयोग होते हैं, तो यह भाषा और अधिक समावेशी बनेगी।

विशेषकर उन क्षेत्रों में जहाँ हिंदी प्राथमिक भाषा नहीं है, वहाँ सरल और क्षेत्रीय शब्दों का मिश्रण एक सेतु का काम करेगा। इससे अहिंदी भाषी कर्मचारियों में भी राजभाषा के प्रति अपनापन बढ़ेगा और वे सरकारी कामकाज में अधिक उत्साह से भाग ले सकेंगे।

निष्कर्ष

हिंदी केवल एक भाषा या सरकारी कामकाज का माध्यम नहीं है, बल्कि यह भारत की साझी विरासत और अस्मिता का प्रतीक है। राजभाषा की वास्तविक सार्थकता तभी सिद्ध होगी जब वह केवल फाइलों की बंद आलमारियों तक सीमित न रहकर 'जन-जन के संवाद' और 'दिल की भाषा' बनेगी।

"भारत में हर भाषा का सम्मान है,

पर हिंदी ईश्वर का वरदान है।।"

सरल हिंदी न केवल प्रशासन को पारदर्शी बनाती है, बल्कि यह आम जनता का सरकार पर विश्वास भी बढ़ाती है। देवनागरी लिपि का उपयोग करने के लिए आज हमारे पास श्रेष्ठ तकनीक उपलब्ध है। अब यह हमारी सामूहिक जिम्मेदारी है कि हम हिंदी को बोझिल शब्दावली से मुक्त करें और एक ऐसी 'सहज राजभाषा' के रूप में प्रतिष्ठित करें जो सफल और सुगम प्रशासन की असली कुंजी साबित हो।

कार्यालय की गरिमा है, जन-जन की आवाज़,
हिंदी में ही सजता है, अब शासन का हर काज।
पर ध्यान रहे यह बात सदा, हम इसे सरल ही रखेंगे,
शब्दों के भारी बोझ तले, भावों को नहीं दबाएंगे।

न भारी शब्द, न मुश्किल राह, भाषा हो ऐसी बहती धार,
जो सीधे दिल से निकले और कर दे मन के द्वार पार।
प्रशासन के हर एक पन्ने पर, जब सहज लेखनी छाएगी,
तभी देश के कोने-कोने तक, अपनी भाषा पहुँच पाएगी।

'अनुमोदन' और 'कार्रवाई', जब सहज रूप में आएंगे,
पढ़ने वाले भी अर्थों को, तुरंत समझ तब पाएंगे।
संस्कृत की गरिमा तो है, पर लोक-रीत भी प्यारी हो,
बोलचाल के शब्दों से, सजी-सँवरी ये क्यारी हो।

गर्व से इसमें काम करें, इसे न समझें कोई भार,
सरल हिंदी ही बनेगी, विकसित भारत का आधार।
जितनी सीधी, जितनी सादी, उतनी प्रभावशाली है,
हिंदी हमारी संस्कृति की, सबसे सुंदर प्याली है।

बस सेवा BEST - मुंबई की धड़कन के 100 गौरवशाली वर्ष (1926 - 2026)

श्री चौडय्या थोगाटा,
उप प्रबंधक (वित्त)

मुंबईकरों की सेवा में समर्पण का एक शतक

मुंबई, जिसे हम सपनों का शहर कहते हैं, आज 2 करोड़ से अधिक की विशाल आबादी को अपने भीतर समेटे हुए है। इस महानगर की रफ्तार को बनाए रखने में यहाँ की सार्वजनिक परिवहन प्रणाली की सबसे बड़ी भूमिका है।

जहाँ एक ओर उपनगरीय रेलवे (लोकल ट्रेन) को मुंबई की 'लाइफलाइन' कहा जाता है, वहीं BEST (बृहन्मुंबई इलेक्ट्रिक सप्लाई एंड ट्रांसपोर्ट) इस शहर का वह 'अनमोल रत्न' है, जो रेल की पहुँच से दूर इलाकों को भी मुख्य धारा से जोड़ता है।

घोड़ा-गाड़ी से आधुनिक सफर तक का इतिहास

आजादी से पहले, जब इसे 'बॉम्बे ट्राम्बे कंपनी लिमिटेड' के नाम से जाना जाता था, तब मुंबई की सड़कों पर घोड़ों द्वारा खींची जाने वाली ट्राम चला करती थीं। लेकिन बढ़ती आबादी और संकरी सड़कों पर बढ़ते ट्रैफिक के कारण एक बड़े बदलाव की आवश्यकता महसूस हुई। इसी आवश्यकता ने 15 जुलाई 1926 को जन्म दिया-जब मुंबई की सड़कों पर पहली बार मोटर बस उतरी। यह परिवहन के इतिहास में एक क्रांतिकारी कदम था जिसने ट्राम के युग को धीरे-धीरे समाप्त कर सफर को नई रफ़्तार दी।

परिवर्तन और आधुनिकता का संगम

दशकों से BEST न केवल मुंबईकरों के दैनिक जीवन का हिस्सा रही है, बल्कि इसने वक्त के साथ खुद को बदला भी है।

शानदार सफर : शहर की पहचान बन चुकी डबल-डेकर बसें हों या चिलचिलाती धूप में राहत देने वाली AC बसें, BEST ने हमेशा यात्रियों के आराम को प्राथमिकता दी है।

सुरक्षा और तकनीक : सुरक्षा के लिए CCTV कैमरे और बसों की सटीक लोकेशन जानने के लिए GPS सिस्टम जैसी आधुनिक तकनीक को अपनाया गया है।

पर्यावरण संरक्षण : प्रदूषण की चुनौती से लड़ने के लिए अब शहर की सड़कों पर इलेक्ट्रिक बसें दौड़ रही हैं, जो एक 'ईको-फ्रेंडली' मुंबई की ओर बढ़ता कदम है।

डिजिटल क्रांति : 'चिल्लर' की किचकिच खत्म करने के लिए CHALO स्मार्ट कार्ड और ऐप के जरिए सफर को बेहद आसान और कैशलेस बना दिया गया है।

दिग्गजों की यादें और "पुढे चला" का संदेश

BEST के साथ मुंबई के हर आम और खास इंसान की भावनाएं जुड़ी हैं। अपने "पुढे चला" (आगे बढ़िए) अभियान के माध्यम से BEST ने दिखाया है कि यह सिर्फ एक बस सेवा नहीं, बल्कि यादों का पिटारा है :

क्रिकेट के भगवान सचिन तेंदुलकर ने याद किया कि कैसे वे अपने बचपन में शिवाजी पार्क प्रैक्टिस के लिए 315 नंबर की बस में सफर करते थे।

अभिनेता अनिल कपूर ने भी चेंबूर से अपने स्ट्रगल के दिनों और ऑडिशन तक पहुँचने के लिए BEST बसों के योगदान को साझा किया है।

भविष्य की ओर बढ़ते कदम

पिछले 100 वर्षों से मुंबई की नसों में दौड़ती यह बस सेवा आज भी उतनी ही प्रासंगिक है। BEST का यह सफर केवल 2026 तक सीमित नहीं है, बल्कि यह आने वाली कई पीढ़ियों तक मुंबई की प्रगति में अपना अमूल्य योगदान देती रहेगी।

BEST बस: कल भी, आज भी और हमेशा के लिए!

किन्नर कैलाश यात्रा

श्री मयूर चंद्रकांत शिंदे,
प्रबंधक, संरक्षा (पूर्व खंड)

जहाँ हिमालय की ऊँचाइयाँ आकाश से बातें करती हैं और हर कदम पर भगवान शिव का आशीर्वाद महसूस होता है - वह स्थान है किन्नर कैलाश।

किन्नर कैलाश यात्रा केवल एक ट्रैक नहीं, बल्कि एक आध्यात्मिक साधना है। यह यात्रा हिमाचल प्रदेश के किन्नौर जिले में स्थित शिवजी के पवित्र लिंग स्वरूप के दर्शन के लिए की जाती है। समुद्र तल से लगभग 4800 मीटर की ऊँचाई पर स्थित किन्नर कैलाश शिवलिंग हर साल हजारों श्रद्धालुओं और ट्रैकर्स को अपनी ओर आकर्षित करता है।

पौराणिक महत्व और विशेषताएँ

पुराणों के अनुसार, एक समय जब राक्षसों का अत्याचार पृथ्वी पर बहुत बढ़ गया था, तब भगवान शिव ने किन्नर कैलाश पर्वत को अपनी तपस्या स्थली के रूप में चुना। कहते हैं कि इस स्थान पर भगवान शिव और माता पार्वती ने वर्षों तक साधना की थी। शिवलिंग की ऊँचाई लगभग 80 फीट मानी जाती है और यह एक विशाल चट्टान के रूप में खड़ा है। सबसे अद्भुत बात यह है कि यह शिवलिंग हर मौसम में अपना रंग और आकृति बदलता है, जो भक्तों को एक दिव्य संकेत लगता है। कहा जाता है कि जो व्यक्ति पूरे मन, संयम और श्रद्धा से इस यात्रा को करता है, उसे अपने जीवन में आध्यात्मिक दिशा मिलती है।

यात्रा का अनुभव

किन्नर कैलाश यात्रा सिर्फ एक पहाड़ पर चढ़ने की बात नहीं है, बल्कि यह शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक रूप से खुद को परखने की यात्रा भी है। यहाँ हर कदम पर प्रकृति की सुंदरता, शक्ति और एक दिव्य ऊर्जा का अनुभव होता है। तेज हवाएँ और दूर-दूर तक सिर्फ शांति या फिर 'हर-हर महादेव' की जय-जयकार सुनाई देती है। यह एक कठिन ट्रेक है, जिसकी कुल दूरी 28 किमी की है। यह यात्रा अगस्त महीने में शुरू होती है। इस यात्रा को करने के लिए पहचान

पत्र के साथ परमिट लेना अनिवार्य है। हम सुबह चंडीगढ़ से जल्दी रवाना होकर किन्नौर के तंगलिंग गाँव पहुँचे। यह लगभग 12-15 घंटे की लंबी ड्राइव थी, लेकिन सतलज नदी और पहाड़ों के सुंदर नजारे रास्ते भर मंत्रमुग्ध करते रहे। तंगलिंग में रात भर रुकने के बाद जब अगले दिन ट्रेक की शुरुआत हुई, तो खूबसूरत सुबह में हम सेब के पेड़ों से भरे हुए जंगल से होकर ऊँचे रास्तों पर पहुँचे। लगभग 6-7 घंटे की चढ़ाई के बाद हम गणेश पार्क पहुँचे, जो 11,811 फीट पर स्थित है। यहाँ का वातावरण पूरी तरह शांत और आध्यात्मिक है। (गणेश पार्क का दृश्य)

हमने अपना टेंट यहीं लगाया। गणेश पार्क के नज़ारों के क्या कहने! नीचे की तरफ बहती नदियाँ और ऊपर की तरफ दूर-दूर तक फैली हिमालय पर्वत श्रृंखला, और उनके बीच विराजे बाबा कैलाश। रात को भोजन के बाद योजना सुबह 2-3 बजे निकलने की थी, लेकिन सारी योजना मौसम पर निर्भर करती है। (गणेश गुफा में बसे आर्मी और फॉरेस्ट के टेंट)

अंतिम चढ़ाई और दर्शन

हमने अपनी यात्रा सुबह 2 बजे शुरू कर दी। 3-4 घंटे की चढ़ाई के बाद गणेश गुफा आती है, जहाँ सेना और वन विभाग के जवान व्यवस्था संभालते हैं। यहाँ कुछ देर विश्राम करने के बाद बड़े-बड़े पत्थरों (बोल्डर्स) को पार करते हुए आगे बढ़ना होता है। यहाँ की चढ़ाई काफी सीधी और कठिन है; कभी बड़े पत्थरों के ऊपर से, तो कभी उनके नीचे से निकलना पड़ता है, और कहीं-कहीं तो रस्सी पकड़कर खड़ी चढ़ाई चढ़नी पड़ती है। (कैलाश की ओर जाने वाले पथरीले रास्ते)

चढ़ाई की कठिनाई देख कुछ लोग पहले ही हिम्मत हार जाते हैं, तो कुछ बीच रास्ते से वापस लौट जाते हैं। जिन्हें

बाबा दर्शन देना चाहते हैं, केवल वही ऊपर तक जाने का साहस जुटा पाते हैं। शिखर पर पहुँचकर जब बाबा के दर्शन होते हैं, तो एक असीम आनंद की अनुभूति होती है। वहाँ अधिक समय रुकना सुरक्षित नहीं है, क्योंकि मौसम तेजी से बदलता है और हमें वापस भी उतरना था। (साक्षात किन्नर कैलाश के दर्शन)

वापसी

दर्शन के बाद हमने वापसी की यात्रा शुरू की। गणेश पार्क लौटते-लौटते रात के 9:00 बज चुके थे। अगले दिन हम पुनः तंगलिंग गाँव पहुँच गए। कुल मिलाकर यह यात्रा अत्यंत रोमांचक और यादगार रही। सेब के बागान, कलकल करती नदियाँ और बाबा कैलाश के दिव्य दर्शन मेरी स्मृतियों में हमेशा जीवंत रहेंगे।

सम्मान

राजभाषा पत्रिका जलतरंग के लिए कीर्ति पुरस्कार पुरस्कार प्राप्त करते समय बाएँ से खड़े श्री अनूपकुमार श्रीवास्तव, निदेशक राजभाषा, श्री राजनाथ सिंह, गृह मंत्री, श्री प्रणब कुमार मुखर्जी, राष्ट्रपति, श्री किरण रीजीजू (गृह राज्य मंत्री) रियर एडमिरल आर के श्रावत, सीएमडी, एमडीएल, डॉ बिपिन बिहारी सचिव राजभाषा।

एमडीएल पत्रिका "जलतरंग" को 16 जुलाई 2021 को संपन्न टॉलिक की जूम मीटिंग में वर्ष 2020-21 के लिए उत्कृष्ट गृहपत्रिका का प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया। राजभाषा शील्ड के साथ निदेशक (वित्त), श्री संजीव सिंघल, श्री पी डी सिद्दीकी, उप प्रबंधक (राजभाषा) के साथ राजभाषा कर्मचारीगण

एमडीएल द्वारा प्रकाशित राजभाषा पत्रिका "जलतरंग" को मुंबई उपक्रम टॉलिक द्वारा 17 जुलाई, 2024 को प्रथम पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया।

स्कोप द्वारा उत्कृष्ट पत्रिका का पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री संतोष कुमार मल्लिक मप्र(मा.सं), श्रीनिवास सिन्हा अमप्र-(मा.सं), श्री रामप्रीत यादव सप्र(राजभाषा)

माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड को वर्ष 2024-25 के दौरान गृह पत्रिकाओं की श्रेणी में मुंबई (उपक्रम) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा 'द्वितीय पुरस्कार' से सम्मानित किया गया, इस अवसर पर पुरस्कार प्राप्त करते हुए निदेशक (समवाय योजना एवं कार्मिक), महाप्रबंधक (मानव संसाधन एवं राजभाषा) एवं अन्य अधिकारीगण।

आशीर्वाद राजभाषा संस्थान की ओर से 23 सितम्बर, 16 को मुंबई दूरदर्शन केंद्र वर्ली, में आयोजित 25वें समारोह में एमडीएल की श्रेष्ठ गृह पत्रिका (जलतरंग) को श्री किरण शांताराम से पुरस्कार प्राप्त करते हुए वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी श्री रामप्रीत यादव और श्री पी डी सिद्दीकी

साहित्यिक संस्था आशीर्वाद से पत्रिका के लिए सर्वोत्तम पुरस्कार माननीय भारी उद्योग मंत्री श्री अरविंद सावंत से प्राप्त करते हुए श्री पी डी सिद्दीकी, श्री रामप्रीत यादव सप्र(राजभाषा)

की लहरें

7 दिसंबर '17 को आयोजित (SCOPE) कार्यक्रम के अवसर पर मुख्य अतिथि कर्नल राज्यवर्धन सिंह राठौर, युवा एवं खेल और सूचना एवं प्रसारण राज्यमंत्री से एमडीएल की राजभाषा पत्रिका 'जलतरंग' को 'सर्वश्रेष्ठ गृहपत्रिका' के लिए प्रथम पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री संतोष कुमार मल्लिक, मप्र (मास), श्री श्रीनिवास सिन्हा, उमप्र (मास एव राभा) तथा पीडी सिद्दीकी, सप्र (राजभाषा)

माननीय राज्यपाल महाराष्ट्र राज्य श्री भगत सिंह कोश्यारी द्वारा राजभवन में 'उत्कृष्ट गृहपत्रिका' का आशीर्वाद पुरस्कार ग्रहण करते हुए - डॉ संतोष कुमार मल्लिक, कार्यकारी निदेशक (मा.सं.), श्री श्रीनिवास सिन्हा, अपर महाप्रबंधक (मा.सं. एवं राजभाषा) एवं श्री पी डी सिद्दीकी, उप प्रबंधक (राजभाषा

टॉलिक के 71वें बैठक में माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड के राजभाषा गृहपत्रिका को 'उत्कृष्ट पत्रिका पुरस्कार' से सम्मानित करते हुए डॉ. सुस्मिता भट्टाचार्य, उप निदेशक (कार्यान्वयन) पश्चिम एवं एमपीसीएल के वरिष्ठ अधिकारीगण

टालिक द्वारा राजभाषा पत्रिका का प्रथम पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री संजीव शर्मा नि (वित्त), कमांड गौरव अग्रवाल, श्री पी डी सिद्दीकी, श्री रामप्रीत यादव, सुश्री जयंतिका मुखर्जी एवं श्री सिमनलाल आर

21 जुलाई 2017 को मुंबई टॉलिक की 59वीं बैठक में माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड की राजभाषा पत्रिका "जलतरंग" को "श्रेष्ठ गृहपत्रिका" के लिए प्रथम पुरस्कार ट्रॉफी प्राप्त करते हुए कमोडोर राकेश आनन्द, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, श्री संतोष कुमार मल्लिक, मप्र (मासं) एवं अन्य अधिकारी

18 जुलाई 2016 को टॉलिक की 57वीं बैठक में सचिव (राजभाषा) तथा अध्यक्ष - मुंबई (पीएसयू) टॉलिक के करकमलों से एमडीएल गृह पत्रिका जलतरंग को प्रथम पुरस्कार एवं कार्यान्वयन में पुरस्कार प्राप्त करते हुए कमोडोर राकेश आनंद, निदेशक (समग्र योजना एवं कार्मिक) एवं हिन्दी अधिकारी एवं हिन्दी कर्मी

कॉरपोरेट कम्युनिकेशन समिट 2016 स्कोप कान्वेंशन सेंटर नई दिल्ली 21-22 जुलाई को पुरस्कार वितरण समारोह स्कोप द्वारा हिन्दी की सर्वश्रेष्ठ गृहपत्रिका का पुरस्कार डॉ. बी के अग्रवाल तथा श्री सुधीर चौधरी (मुख्य संपादक जी टी वी) से प्राप्त करते हुए श्री रामप्रीत यादव (वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी) और श्री परवेज पंचारी (पी आर ओ)

सतर्कता विभाग की सकारात्मक पहल

संस्थागत पारदर्शिता और प्रणालीगत सुधारों की एक उत्कृष्ट मिसाल

श्री हणमंत करमाळकर,
मुख्य प्रबंधक (सतर्कता)

किसी भी सशक्त और पारदर्शी संगठन की सफलता के पीछे एक जागरूक सतर्कता विभाग की अहम भूमिका होती है। सतर्कता विभाग का कार्य केवल कमियों को उजागर करना नहीं है, बल्कि 'प्रणालीगत सुधारों' के माध्यम से संगठन की कार्यप्रणाली को अधिक सुदृढ़, कर्मचारी-अनुकूल और गुणवत्तापूर्ण बनाना है। इसी सकारात्मक दृष्टिकोण को दर्शाते हुए, सतर्कता विभाग द्वारा दो महत्वपूर्ण क्षेत्रों में किए गए उत्कृष्ट सुधारों की केस स्टडी नीचे प्रस्तुत की जा रही है।

इस लेख को दो मुख्य भागों में विभाजित किया गया है, जो यह स्पष्ट करते हैं कि कैसे सही समय पर किए गए हस्तक्षेप और नीतिगत बदलावों से न केवल वैधानिक अनुपालन सुनिश्चित होता है, बल्कि सेवाओं की गुणवत्ता में भी अभूतपूर्व सुधार आता है।

भाग 1: जॉब आउटसोर्सिंग और मैनपॉवर आउटसोर्सिंग

संक्षिप्त परिचय और पृष्ठभूमि :

किसी भी संगठन में उपकरणों को उठाने और स्थानांतरित करने जैसे कार्यों के लिए आउटसोर्सिंग एक सामान्य प्रक्रिया है। इसी संदर्भ में एक निविदा दैनिक मजदूरी दर के आधार पर आमंत्रित की गई थी। हालांकि, प्रक्रिया के दौरान एक महत्वपूर्ण बिंदु सामने आया कि न्यूनतम बोली लगाने वाले (L1) बोलीदाता द्वारा वैधानिक अधिनियमों, विशेषकर 'न्यूनतम मजदूरी अधिनियम', पीएफ और ईएसआई का पूर्णतः अनुपालन नहीं किया जा रहा था। पूर्व-योग्यता मानदंडों के बावजूद, जब श्रमिक कल्याण और वैधानिक देनदारियों की बात आई, तो निविदा को रद्द करने का एक साहसिक और सही निर्णय लिया गया।

जांच में यह सामने आया कि 'जॉब आउटसोर्सिंग' के तहत उपकरणों के वजन और साइट की परिस्थितियों के कारण आवश्यक दैनिक मजदूरी का सटीक अनुमान लगाना संभव नहीं था। ऐसे में, बिना स्पष्ट परिभाषा के 'दैनिक मजदूरी' दरें आमंत्रित करने से न्यूनतम मजदूरी के अनुपालन में विसंगतियां उत्पन्न हो रही थीं।

सकारात्मक कार्यान्वयन (प्रणालीगत सुधार) :

इस समस्या को जड़ से समाप्त करने और भविष्य में निविदा प्रक्रिया को पूरी तरह से पारदर्शी बनाने के लिए सतर्कता विभाग ने अत्यंत सकारात्मक और प्रभावी सुधार लागू किए :

1. यह तय किया गया कि जहाँ 'जॉब आउटसोर्सिंग' से संबंधित कार्य क्षेत्र में गतिविधियों की मात्रा निर्धारित नहीं की जा सकती और दरें 'दैनिक मजदूरी ' के आधार पर मांगी जानी हैं, तो उसे 'मैनपॉवर हायरिंग' के समान माना जाए। न्यूनतम मजदूरी सुनिश्चित करने के लिए मानव संसाधन विभाग से अनिवार्य रूप से इनपुट लिए जाने का प्रावधान किया गया।

2. निविदा के SOW में जनशक्ति की श्रेणी को अत्यंत स्पष्ट रूप से परिभाषित करने का निर्देश दिया गया— जैसे कि अकुशल, अर्ध-कुशल, और कुशल। इससे किसी भी प्रकार के भ्रम की गुंजाइश खत्म हो गई।
3. SOW में मूल वेतन, महंगाई भत्ता , पीएफ , ईएसआई, और वैधानिक अवकाश जैसी सभी प्रासंगिक बातों का स्पष्ट उल्लेख अनिवार्य कर दिया गया।

प्रभाव और लाभ :

सतर्कता विभाग के इन सुधारात्मक कदमों का प्रभाव अत्यंत सकारात्मक रहा। इन प्रणालीगत सुधारों के लागू होने से बोलीदाताओं द्वारा वैधानिक आवश्यकताओं के गैर-अनुपालन की समस्या लगभग समाप्त हो गई। श्रमिक वर्ग के अधिकारों (न्यूनतम मजदूरी और अन्य लाभ) की पूरी तरह से रक्षा हुई। साथ ही, बाद के चरणों में निविदाओं के रद्द होने की संभावना कम हो गई, जिससे संगठन के समय और संसाधनों की भारी बचत हुई और पूरी प्रक्रिया में एक नई पारदर्शिता स्थापित हुई।

भाग 2: एक्जीक्यूटिव मेस सेवाओं में प्रणालीगत सुधार - गुणवत्ता, स्वच्छता और सुशासन की दिशा में कदम

संक्षिप्त परिचय और पृष्ठभूमि :

वित्तीय वर्ष 2020-21 की ऑडिट रिपोर्ट और उस पर आधारित टिप्पणियों के आलोक में, सतर्कता विभाग ने 'एक्जीक्यूटिव मेस' के कामकाज को और अधिक बेहतर बनाने के उद्देश्य से एक औचक निरीक्षण किया। मेस सेवाएँ प्रदान करने के लिए एक मेस ठेकेदार के साथ अनुबंध किया गया था।

निरीक्षण के दौरान उद्देश्य यह था कि सेवाओं की गुणवत्ता उच्चतम स्तर की हो। जांच में सुधार के कई अवसर पहचाने गए, जैसे - डिजिटल पेमेंट (सोडेक्सो/कार्ड) स्वीकार न करना, अनधिकृत प्रवेश, मौखिक निर्देशों का उपयोग, निरीक्षण रिकॉर्ड और हिंड्रेंस रजिस्टर का न होना, मेस कर्मचारियों की चिकित्सा जांच का अभाव, कच्चे माल की गुणवत्ता व स्टॉक में कमी, और स्वच्छता (पेस्ट कंट्रोल) में देरी के कारण कीटों (कॉकरोच) की उपस्थिति। प्रभारी अधिकारीन के स्तर पर भी निगरानी को और अधिक सख्त करने की आवश्यकता महसूस की गई।

सकारात्मक कार्यान्वयन (प्रणालीगत सुधार) :

इन अवलोकनों को एक अवसर के रूप में लेते हुए, प्रबंधन और सतर्कता विभाग ने मेस के संचालन को विश्वस्तरीय बनाने के लिए निम्नलिखित प्रणालीगत सुधार लागू किए:

1. भविष्य के सभी अनुबंधों में सोडेक्सो, क्रेडिट/डेबिट कार्ड और वॉलेट जैसे डिजिटल भुगतान विकल्पों को SOW में शामिल करना अनिवार्य कर दिया गया। 2. विभागाध्यक्ष को मेस के पर्यवेक्षण के लिए हर पखवाड़े समीक्षा बैठकें आयोजित करने की जिम्मेदारी दी गई।

3. ठेकेदार के कर्मचारियों की अनिवार्य चिकित्सा जांच का क्लॉज़ निविदा में जोड़ा गया। इसके अलावा, पेस्ट कंट्रोल जैसे महत्वपूर्ण अनुबंधों के समाप्त होने से पहले ही त्वरित कार्रवाई के निर्देश दिए गए।

4. भोजन की गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए नए टेंडर में 'हेड कुक' के लिए कम से कम 2 साल और 'मेस मैनेजर' के लिए कम से कम 1 साल के अनुभव का प्रमाण पत्र अनिवार्य किया गया। परोसे जाने वाले भोजन की रैंडम जांच के लिए मेस में 'इलेक्ट्रॉनिक वजन मशीन' उपलब्ध कराई गई। 5. मेस में प्रवेश को सुगम और अनुशासित बनाने के लिए एमडीएल के अधिकारियों के लिए 'नेम बैज' पहनना अनिवार्य किया गया।

6. **प्रवेश नियंत्रण:** अन्य कर्मियों (जैसे DEO, ठेका कर्मचारी आदि) को प्रबंधन की पूर्व मंजूरी के साथ ही प्रवेश की अनुमति दी गई, वह भी दोपहर 1 बजे के बाद, सुरक्षा गार्ड की तैनाती और उनके लिए अलग बैठने व काउंटर की व्यवस्था के साथ।

रिकॉर्ड और रजिस्टर : शिकायत रजिस्टर, हिंड्रेंस रजिस्टर और निरीक्षण रिकॉर्ड के उचित रखरखाव को अनिवार्य किया गया। शिकायतों पर की गई कार्रवाई की संयुक्त रूप से (ठेकेदार और OIC द्वारा) हस्ताक्षर कर पुष्टि करने का नियम बनाया गया।

निरंतर जांच : कार्यप्रणाली में सुधार के लिए सीएमसी के साथ मिलकर औचक निरीक्षण करना और कच्चे माल के स्टॉक रजिस्टर की सख्त निगरानी करना सुनिश्चित किया गया। खराब उपकरणों की तुरंत मरम्मत और उसका रिकॉर्ड रखना अनिवार्य किया गया।

प्रभाव और लाभ :

इन व्यापक और सुविचारित प्रणालीगत सुधारों के लागू होने से एक्जीक्यूटिव मेस के स्वरूप और कार्यप्रणाली में क्रांतिकारी परिवर्तन आया है। भोजन परोसने की गुणवत्ता में अभूतपूर्व सुधार हुआ है और स्वच्छता से जुड़ी सभी समस्याओं का स्थायी समाधान हो गया है। एक पारदर्शी और जवाबदेह निगरानी प्रणाली स्थापित होने से मेस की दिन-प्रतिदिन की गतिविधियां सामान्य और बेहद सुव्यवस्थित हो गई हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इन सकारात्मक बदलावों ने एक्जीक्यूटिव मेस की गरिमा बनाए रखने और वहां के माहौल को उच्च स्तरीय बनाने में अहम योगदान दिया है।

निष्कर्ष :

सतर्कता विभाग की ये दोनों केस स्टडीज यह प्रमाणित करती हैं कि जब सतर्कता का उद्देश्य केवल कमियां खोजना नहीं, बल्कि व्यवस्था को सुधारना होता है, तो इसके परिणाम बेहद सुखद होते हैं। पहले मामले में जहाँ निविदा प्रक्रिया में श्रमिकों के अधिकारों और पारदर्शिता की रक्षा की गई, वहीं दूसरे मामले में कर्मचारियों के स्वास्थ्य, स्वच्छता और बेहतरीन भोजन व्यवस्था को सुनिश्चित किया गया। ये सुधार अन्य विभागों और संस्थानों के लिए भी एक आदर्श प्रस्तुत करते हैं कि सही नीयत और सुस्पष्ट नीतियों से किसी भी प्रणाली को सर्वश्रेष्ठ बनाया जा सकता है।

मुंबई की होली 2026 का रंग

श्रीमती श्रेया निकेश दिवेकर,
डीईओ (राजभाषा)

समंदर की लहरों पर सुबह की पहली किरण छाई है,
देखो, 2026 की होली मुंबई के मरीन ड्राइव पर आई है।
अब न गुब्बारों का शोर है, न पानी की बर्बादी का डर,
'स्मार्ट होली' के रंगों से सराबोर है आज अपना यह शहर।
लोकल की भीड़ में भी गुलाल की एक महक पुरानी है,
पर अब 'डिजिटल पे' से आती रंगों की नई कहानी है।
वर्ली सी-लिंक की ऊँचाइयों से गिरती रंगों की फुहार,
जैसे सात रंगों में लिपटा हो सपनों का यह संसार।
पुनर्निर्मित घरों से लेकर चमचमाते टावरों तक,
गूँज रही है फागुन की मस्ती, गलियों से लेकर चौराहों तक।
कोई खेल रहा 'नेचुरल कलर्स' से, कोई गीत संगीत में खोया है,
आज व्यस्त मुंबई का हर चेहरा, खुशी की नींद सोया है।
वड़ा-पाव की प्लेट में अब ठंडाई का भी स्वाद है,
दोस्ती के इस जश्न में न कोई शिकवा, न कोई अपवाद है।
जाति-पाति और भाषा के बंधन को पीछे छोड़ आए हैं,
हम मुंबईकर, खुशियों के समंदर में डूबने आए हैं।
रजत चमक है पच्चीस की, खुशियों की यह उमंग है,
जलतरंग की हर लहर में, रजत अंक का रंग है,
आओ 2026 की इस आधुनिक होली को हम सब दिल से मनाएँ।
प्यार की इस बौछार में, यादों की नई ज्योत जलाएं।

स्वास्थ्य

प्राकृतिक वरदान - तुलसी

भारतीय संस्कृति और आयुर्वेद में तुलसी को केवल एक पौधा नहीं, बल्कि 'मिट्टी का डॉक्टर' और 'जीवन का अमृत' माना गया है। राजभाषा अनुभाग के इस विशेष स्तंभ में, आइए जानते हैं कि कैसे घर के आंगन में लगा यह छोटा सा पौधा हमारे स्वास्थ्य के लिए एक संपूर्ण सुरक्षा कवच है। तुलसी के मुख्य औषधीय लाभ

* रोग प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि:

तुलसी में जिंक और विटामिन-सी प्रचुर मात्रा में होता है। यह एंटी-बैक्टीरियल और एंटी-वायरल गुणों से भरपूर है, जो शरीर को संक्रमणों से लड़ने की शक्ति प्रदान करता है।

* तनाव और मानसिक शांति:

तुलसी एक बेहतरीन 'एडैप्टोजेन' (Adaptogen) है। इसके पत्तों के सेवन से शरीर में 'कोर्टिसोल' हार्मोन का स्तर नियंत्रित रहता है, जिससे मानसिक तनाव और चिंता कम होती है।

* श्वसन संबंधी रोगों में लाभकारी:

सर्दी, खांसी, और दमा जैसी समस्याओं में तुलसी का काढ़ा रामबाण सिद्ध होता है। यह फेफड़ों में जमा कफ को साफ करने में मदद करता है।

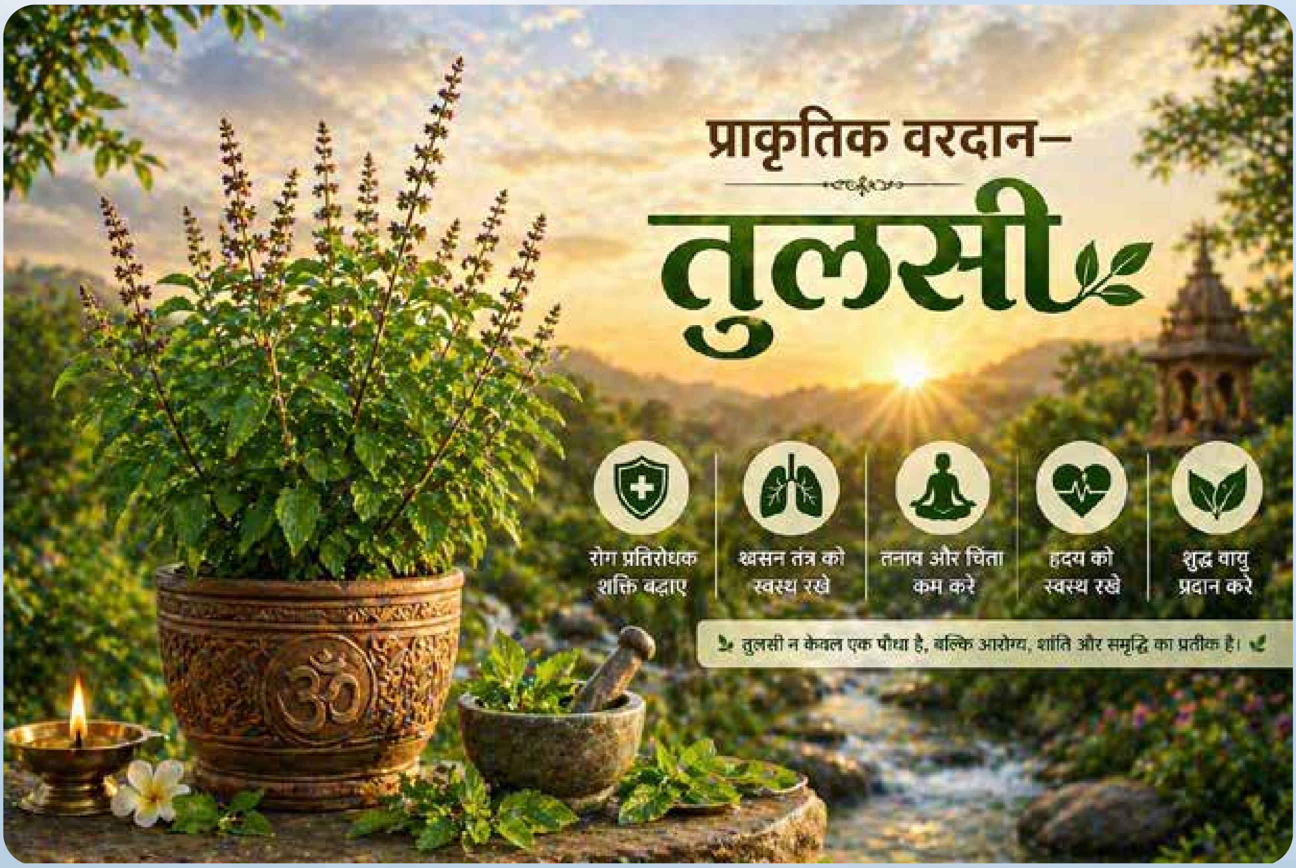

* हृदय स्वास्थ्य:

तुलसी के नियमित सेवन से रक्तचाप नियंत्रित रहता है और कोलेस्ट्रॉल के स्तर में सुधार आता है, जो हृदय को स्वस्थ रखने के लिए अनिवार्य है।

* त्वचा और मुख स्वास्थ्य:

तुलसी के अर्क में एंटी-ऑक्सीडेंट्स होते हैं जो त्वचा को निखारते हैं। तुलसी के अर्क या पानी से कुल्ला करने से सांसों की दुर्गंध दूर होती है और मसूड़े स्वस्थ रहते हैं।

उपयोग करने के सरल तरीके

विधि	लाभ
तुलसी की चाय/काढ़ा	जुकाम, बुखार और थकान को दूर करने के लिए।
खाली पेट तुलसी का अर्क या पत्तों को पानी के साथ निगलना	पाचन तंत्र को सुधारने और इम्युनिटी बढ़ाने के लिए।
तुलसी और शहद	गले की खराश और पुरानी खांसी के लिए उत्तम

विशेष सुझाव:

तुलसी के पत्तों में पारा की अल्प मात्रा होती है, इसलिए इन्हें दांतों से चबाने के बजाय सीधे निगलना या पानी/चाय में उबालकर लेना अधिक बेहतर माना जाता है।

निष्कर्ष:

आज की भागदौड़ भरी जीवनशैली में तुलसी हमारे लिए प्रकृति का सबसे सरल और सुलभ उपचार है। 'जलतरंग' के इस अंक के माध्यम से हम सभी पाठकों से आग्रह करते हैं कि अपनी दैनिक दिनचर्या में तुलसी को शामिल करें और एक स्वस्थ जीवन की ओर कदम बढ़ाएं।

साहित्य दर्शन

आधुनिक मीरा - महादेवी वर्मा

हिन्दी साहित्य के आकाश में 'आधुनिक मीरा' के नाम से देदीप्यमान महादेवी वर्मा केवल एक कवयित्री नहीं, बल्कि नारी चेतना और करुणा की साक्षात प्रतिमूर्ति थीं। छायावाद के चार प्रमुख स्तंभों में से एक होने के नाते, उन्होंने अपनी लेखनी से हिन्दी गद्य और पद्य दोनों को समृद्ध किया।

जीवन परिचय: एक दृष्टि

महादेवी वर्मा का जन्म 26 मार्च, 1907 को उत्तर प्रदेश के फर्रुखाबाद में हुआ था। उनके परिवार में लगभग सात पीढ़ियों के बाद पुत्री का जन्म हुआ था, इसीलिए उनके बाबा ने उन्हें 'घर की देवी' मानते हुए उनका नाम 'महादेवी' रखा। उनकी प्रारंभिक शिक्षा इंदौर में हुई और बाद में उन्होंने प्रयाग विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम.ए. किया। वे प्रयाग महिला विद्यापीठ की प्रधानाचार्या और बाद में कुलपति रहीं। उन्होंने महिलाओं की शिक्षा और आत्मनिर्भरता के लिए अपना पूरा जीवन समर्पित कर दिया।

सम्मान

उन्हें भारत के सर्वोच्च साहित्यिक सम्मान 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' (यामा के लिए), पद्म भूषण और पद्म विभूषण से नवाजा गया।

प्रमुख साहित्यिक कृतियाँ महादेवी जी का साहित्य हृदय की पीड़ा और प्रकृति के रहस्यों का अद्भुत संगम है। उनकी प्रमुख रचनाओं को हम निम्नलिखित श्रेणियों में देख सकते हैं:

1. काव्य संग्रह (पद्य)

उनकी कविताओं में विरह की एक अलौकिक वेदना और आध्यात्मिकता झलकती है।

* नीहार: उनका प्रथम काव्य संग्रह।

* रश्मि: इसमें आत्मा-परमात्मा के संबंधों का चित्रण है।

* नीरजा: प्रकृति के सुंदर और कोमल चित्रों का वर्णन।

* सांध्यगीत: जिसमें जीवन के सायं काल के शांत भाव हैं।

* यामा: उनकी प्रसिद्ध कृतियों का संकलन, जिस पर उन्हें ज्ञानपीठ मिला।

2. गद्य साहित्य (रेखाचित्र और संस्मरण)

महादेवी जी का गद्य उनके पद्य से भी अधिक सशक्त माना जाता है। उन्होंने समाज के उपेक्षित वर्गों और पशु-पक्षियों के प्रति अगाध प्रेम व्यक्त किया है।

* अतीत के चलचित्र: इसमें समाज के निम्न वर्ग के पात्रों का मर्मस्पर्शी चित्रण है।

* स्मृति की रेखाएं: उनके जीवन में आए विशिष्ट व्यक्तियों और घटनाओं का संग्रह।

* पथ के साथी: समकालीन रचनाकारों (जैसे निराला, प्रसाद, पंत) के संस्मरण।

* मेरा परिवार: पशु-पक्षियों (नीलकंठ मोर, गिल्लू गिलहरी, गौरा गाय) पर आधारित प्रेमपूर्ण संस्मरण।

3. निबंध संग्रह

* श्रृंखला की कड़ियाँ : भारतीय नारी की समस्याओं और उसकी अस्मिता पर गंभीर विमर्श।

साहित्यिक विशेषताएँ

महादेवी वर्मा के काव्य का मुख्य स्वर 'वेदना' है। वे स्वयं कहती थीं- "मिलन का मत नाम ले, मैं विरह में चिर हूँ।" उनकी रचनाओं में रहस्यवाद और प्रकृति का मानवीकरण प्रमुखता से मिलता है। जहाँ उनका काव्य भावुकता से भरा है, वहीं उनका गद्य यथार्थ की कठोर जमीन पर खड़ा होकर समाज को आईना दिखाता है।

निष्कर्षत:

महादेवी वर्मा का साहित्य भारतीय संस्कृति, मानवीय करुणा और स्त्री विमर्श का वह दस्तावेज है, जो युगों-युगों तक पाठकों का मार्गदर्शन करता रहेगा।

कॉर्पोरेट समाचार

दिनांक 28.11.2025 को P17A श्रेणी के तीसरे स्टटील्थ फ्रिगेट 'तारागिरी' की भारतीय नौसेना को सुपुर्दगी की गई। इस अवसर पर उपस्थित अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक कैप्टन जगमोहन, निदेशकगण एवं एमडीएल और नौसेना के अधिकारीगण।

दिनांक 17.11.2025 को एमपीवी- यार्ड 21002 के कील लेइंग समारोह में उपस्थित निदेशक (जहाज निर्माण) श्री बीजू जॉर्ज एवं वरिष्ठ अधिकारीगण।

कॉर्पोरेट समाचार

दिनांक 09.12.2025 को डी448 आईएनएस इम्फाल की दूसरी रीडिंग में उपस्थित
निदेशक (जहाज निर्माण) श्री बीजू जॉर्ज एवं एमडीएल एवं नौसेना के वरिष्ठ अधिकारीगण।

कॉर्पोरेट समाचार

दिनांक 29.01.2026 को भारतीय तटरक्षक बल के लिए 14 तीव्र गश्ती पोतों (यार्ड-16503) के कील लेईंग समारोह के अवसर पर उपस्थित एमडीएल एवं नौसेना के वरिष्ठ अधिकारीगण।

दिनांक 30.10.2025 को भारतीय तटरक्षक बल के लिए 14 तीव्र गश्ती पोतों (यार्ड-16502) के कील लेईंग समारोह के अवसर पर उपस्थित एमडीएल एवं नौसेना के वरिष्ठ अधिकारीगण।

कॉर्पोरेट समाचार

दिनांक 30.10.2025को भारतीय तटरक्षक बल के लिए 6 तीव्र गश्ती पोतों (यार्ड-16505) के प्लेट कटिंग समारोह के अवसर पर उपस्थित एमडीएल एवं नौसेना के वरिष्ठ अधिकारीगण।

दिनांक 29.01.2026 को भारतीय तटरक्षक बल के लिए 6 तीव्र गश्ती पोतों (यार्ड-16506) की प्लेट कटिंग समारोह के अवसर पर उपस्थित एमडीएल एवं नौसेना के वरिष्ठ अधिकारीगण।

माझगांव डॉक के

दिनांक 26 जनवरी 2026 को आयोजित 77वे गणतंत्र दिवस के अवसर पर संबोधित करते हुए अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक कैप्टन जगमोहन।

दिनांक 20.12.2025 को श्री सत्यनारायण महापूजा एवं यार्ड ओपन डे के अवसर पर उपस्थित अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक एवं वरिष्ठ अधिकारीगण।

दिनांक 12.03.2026 को रक्तदान शिविर उद्घाटन में उपस्थित निदेशक (जहाज निर्माण) श्री बीजू जॉर्ज, निदेशक (समवाय योजना एवं कार्मिक) कमांडर वासुदेव पुराणिक एवं वरिष्ठ अधिकारीगण।

कार्यक्रमों की झलकियाँ

दिनांक 31.10.2025 को माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड ने भारतीय नौसेना के वॉरशिप डिज़ाइन ब्यूरो द्वारा डिज़ाइन किए गए 100वें युद्धपोत और माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड द्वारा निर्मित आईएनएस उदयगिरी की कमीशिनिंग के उपलक्ष्य में एमडीएल के मुंबई परिसर में 'नमन' कार रैली की मेजबानी की। इस अवसर पर अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक कैप्टन जगमोहन द्वारा अन्य वरिष्ठगणों की उपस्थिति में रैली के प्रतिभागियों को सम्मानित किया गया।

दिनांक 11 और 12 फरवरी 2026 सिड्को कन्वेंशन सेंटर, वाशी, नवी मुंबई में WIPS राष्ट्रीय सम्मेलन में उपस्थित निदेशक (समवाय योजना एवं कार्मिक) कमांडर वासुदेव पुराणिक एवं उपस्थित वरिष्ठगण।

दिनांक 17.10.2025 को WIPS द्वारा रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें उपस्थित कार्यकारी निदेशक (मानव संसाधन) श्री अरूण कुमार चान्द, वरिष्ठ अधिकारीगण एवं प्रतिभागी।

दिनांक 10.12.2025 को अनुसूचित जाति-जनजाति महिला एमएसई वेंडरों के लिए विशेष वेंडर विकास कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें उपस्थित वरिष्ठगण।

दिनांक 09.12.2025 को आयोजित 64वीं महाराष्ट्र राज्य मराठी नाटक प्रतियोगिता में एमडीएल स्पोर्ट्स क्लब द्वारा 'एक्स्पायरी डेट' नाटक का मंचन किया गया।

माझगांव डॉक के

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम

दिनांक 06.03.2026 को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित आदरणीय वरिष्ठगण।

दिनांक 05.03.2026 को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर पुरुष कर्मचारियों के लिए नो गैस कुकिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस मौके पर उपस्थित कार्यकारी निदेशक (मानव संसाधन) श्री अरूण कुमार चान्द।

दिनांक 05.03.2026 को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर महिला कर्मचारियों के लिए आयोजित टोट बैग पेंटिंग प्रतियोगिता के कुछ दृश्य।

कार्यक्रमों की झलकियाँ

मराठी राजभाषा भाषा सप्ताह एवं पुरस्कार वितरण समारोह

दिनांक 23.02.2026 से 27.02.2026 तक एमडीएल में मराठी राजभाषा गौरव दिवस के उपलक्ष्य में ग्रंथ दिंडी, निबंध लेखन, कथा कथन, एकपात्री अभिनय, काव्यवचन कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जिसमें उपस्थित आदरणीय वरिष्ठगण । इस कार्यक्रम की कुछ झलकियाँ।

माझगांव डॉक के

दिनांक 10.11.2025को पद्मश्री आनंद कुमार (सुपर 30) द्वारा "दृढ़ता का निर्माण (प्रेरणा); – तमाम मुश्किलों के बावजूद सफलता कैसे पाएँ" विषय पर सत्र का आयोजन।

दिनांक 10.02.2026 और 17.02.2026 को ग्रंलेक्स एसोशिएट एलएलपी से डॉ. श्रीविद्या रवि और श्री चिराग दिघे द्वारा "बौद्धिक संपदा अधिकारों" विषय पर सत्र का आयोजन।

दिनांक 06.01.2026 को सतर्कता विभाग द्वारा "वार्षिक संपत्ति विवरण" विषय पर सत्र का आयोजन।

दिनांक 12.01.2026 को सतर्कता विभाग द्वारा "वार्षिक संपत्ति विवरण" विषय पर सत्र का आयोजन।

दिनांक 13.10.2025 को पेर्फ़ेक्टोर्स हैल्थ केयर प्राइवेट लिमिटेड से श्री सुधाकर केसकर द्वारा "अग्निशमन एवं सुरक्षा" विषय पर सत्र का आयोजन।

दिनांक 11.11.2025 को पेरफेक्टर्स हैल्थ केयर प्राइवेट लिमिटेड से आए श्री सुधाकर केसकर द्वारा "अग्निशमन एवं सुरक्षा" विषय पर सत्र का आयोजन।

कार्यक्रमों की झलकियाँ

दिनांक 14 एवं 15 मार्च 2026 को महिला एवं पुरुष टीम के लिए 'चेयरमेन ट्रॉफी' क्रिकेट टूर्नामेंट का आयोजन किया गया। टूर्नामेंट में उपस्थित निदेशक (समवाय योजना एवं कार्मिक) कमांडर वासुदेव पुराणिक एवं वरिष्ठगण।

दिनांक 29 और 30 नवंबर 2025को महिला एवं पुरुष टीम के लिए 'निदेशक ट्रॉफी' क्रिकेट टूर्नामेंट का आयोजन किया गया। विजेता प्रतिभागियों को निदेशक ट्रॉफी से पुरस्कृत करते हुए श्री अरुण कुमार चान्द, कार्यकारी निदेशक (मानव संसाधन) श्री श्रीनिवास सिन्हा, महाप्रबंधक (मानव संसाधन एवं राजभाषा) एवं अन्य वरिष्ठगण।

दिनांक 21.03.2026 को महिला एवं पुरुष टीम के लिए 'श्रमिक जिमखाना, लोअर परेल, मुंबई में एमडीएल कबड्डी टूर्नामेंट का आयोजन किया गया। विजेता प्रतिभागियों को ट्रॉफी से पुरस्कृत करते हुए श्री अरुण कुमार चान्द, कार्यकारी निदेशक (मानव संसाधन) एवं अन्य वरिष्ठगण।

दिनांक 09 से 11 फरवरी 2026 तक बैंक ऑफ बड़ौदा द्वारा वडोदरा में आयोजित ऑल इंडिया पब्लिक सेक्टर कैरम टूर्नामेंट 2025-26, में एमडीएल टीम की भागीदारी।

दिनांक 09 से 17 मार्च 2026 तक कोल इंडिया लिमिटेड, कोलकाता में अखिल भारतीय सार्वजनिक क्षेत्र T-20 क्रिकेट टूर्नामेंट में एमडीएल कर्मचारियों की भागीदारी।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2025

दिनांक 27.10.2025 से 02.11.2026 के दौरान सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2025 का आयोजन किया गया। इस अवसर पर संबोधित करते हुए अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक कैप्टन जगमोहन एवं वरिष्ठगण। इस कार्यक्रम की प्रमुख झलकियाँ।

राजभाषा गतिविधियाँ

दिनांक 20 मार्च 2026 को राजभाषा अनुभाग द्वारा आयोजित तिमाही बैठक में उपस्थित निदेशकगण एवं वरिष्ठगण।

माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड द्वारा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, मुंबई (उपक्रम) के तत्वावधान में 24 नवंबर, 2025 को ऑनलाइन (ई-मेल) आधार पर "मुंशी प्रेमचंद पर आधारित सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता" का आयोजन किया गया। इस अवसर पर वरिष्ठगणों से पुरस्कार प्राप्त करते हुएविजेता प्रतिभागी।

दिनांक 10.12.2025 को केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो, अनुवाद प्रशिक्षण केंद्र, मुंबई के प्रशिक्षणार्थियों के लिए माझगांव शिपबिल्डर्स लिमिटेड में अध्ययन दौरे का आयोजन किया गया। इस अवसर पर संबोधित करते हुए श्री अरुण कुमार चान्द, कार्यकारी निदेशक (मानव संसाधन) एवं वरिष्ठगण। उक्त हेतु आयोजित बैठक का एक दृश्य।

दिनांक 26 मार्च 2026 को नराकास मुंबई के तत्वावधान में हिंदुस्तान पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड द्वारा प्रख्यात कवियत्री तथा साहित्यकार महादेवी वर्मा के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में आयोजित प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री संदीप दुबे, कनिष्ठ अनुवादक, राजभाषा अनुभाग।

दिनांक 20 नवंबर 2025 को अधिकारी एवं कर्मचारियों के लिए हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस हेतु हिंदी शिक्षण योजना, राजभाषा विभाग, भारत सरकार से श्री विश्वजीत मजूमदार जी को आमंत्रित किया गया ।

पत्रों के दर्पण

दिनांक: 10 जुलाई , 2018

आपकी पत्रिका को नराकास टॉलिक, मुंबई द्वारा श्रेष्ठ गृहपत्रिका का प्रथम पुरस्कार देकर सम्मानित किया जाना निस्संदेह स्वाभाविक है. आपकी पत्रिकाएं इतनी बेहतर बन पड़ी हैं कि गागर में सागर भरा हुआ प्रतीत होता है. आपकी कंपनी उद्देश्य पूरा करने के लिए पत्रिका के माध्यम से कर्मचारियों के अलावा देश की सुरक्षा करते-करते आम जनता के प्रश्नों का समाधान निकालने का हर संभव प्रयास करते दिख रही है, जो कि प्रशंसनीय है.

पत्रिका के अंतर्गत सभी लेखों से कंपनी की उल्लेखनीय गतिविधियों का पता चलता है. इसके अलावा, पत्रिका में देश के स्वतंत्रता सेनानियों की स्मृतियों को सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया गया है. पत्रिका की उत्कृष्ट प्रस्तुति के लिए संपादक मंडल साधुवाद का पात्र है.

शुभकामनाओं सहित,

(कप्तान अनूप कुमार शर्मा)
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक
भारतीय नौवहन निगम लिमिटेड (SCI)

दिनांक: 12/07/2018

माझगाँव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड, मुंबई द्वारा प्रकाशित राजभाषा पत्रिका "जलतरंग" का 8 वां एवं 9वां अंक प्राप्त हुआ। "जलतरंग" को मुंबई टॉलिक का प्रथम पुरस्कार मिलने पर हार्दिक बधाई।

पत्रिका से कंपनी के कार्यकलापों संबंधी जानकारी प्राप्त हुई। पत्रिका में प्रकाशित लेख, कविताएँ, इत्यादि कृतियाँ सराहनीय एवं उपयोगी हैं। देश के स्वतंत्रता सेनानियों को समर्पित अंक गौरव की अनुभूति कराता है। साथ ही 9 वें अंक के द्वारा युद्धपोत एवं पनडुब्बी निर्माण संबंधी दी गई जानकारी निश्चित रूप से पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक है।

पत्रिका द्वारा राजभाषा के प्रचार-प्रसार का कार्य निरंतर होता रहे इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

(रोहित त्रिपाठी)
हिन्दी अधिकारी
जवाहरलाल नेहरू पोर्ट ट्रस्ट (JNPT

दिनांक: 15.06.2024

उक्त अंक के संपादकीय में आपने ठीक ही कहा है कि भाषा की गुणवत्ता उसकी मार्मिकता में छुपी होती है, आपने जलतरंग गृह पत्रिका के माध्यम से इस मार्मिकता को उजागर करने का बेहतरीन प्रयास किया है। आज की तारीख में यह कहने से कोई गुरेज नहीं होना चाहिए कि धीरे-धीरे ही सही किंतु हिंदी भाषा का उपयोग और प्रसार मुख्य रूप से साहित्यिक, सामाजिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में विस्तृत होता जा रहा है। आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी गृह पत्रिका इसी दिशा में अग्रसर है और आधुनिक भारतीय जीवन के विविध पहलुओं को उजागर करने का कार्य कर रही है।

गृह पत्रिका में प्रकाशित लेखों में विविधता पाठकों का ध्यान बरबस अपनी ओर खींचती है। आलेखों की विभिन्न श्रेणियों में समृद्ध विचार व्यक्त किए गए हैं। 'पौत-एक संक्षिप्त वृतांत' और 'साइबर सुरक्षा' जैसे आलेख ज्ञानवर्धक हैं। एक ओर जहाँ 'पानी की कहानी' को पढ़ते हुए रासायनिक और जैविक संघटक की कड़ी आपस में पुल के दो किनारें नजर आते हैं तो वही दूसरी ओर 'सूने घर आज भी राह देखते हैं' जैसे आलेख बरबस सोचने के लिए विवश कर देते हैं कि खाली होते हुए गांवों पर कब सरकार की नजर जाएगी और पलायन खत्म होगा। पत्रिका में प्रकाशित सभी साहित्यिक कोटि के आलेख श्रेयस्कर हैं।

बेहतरीन अंक के सफलतापूर्वक प्रकाशन हेतु संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई।

डॉ. बी. आर. पाल
मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)
मंगलूर रिफाइनरी एण्ड पेट्रोकेमिकल्स लिमिटेड (MRPL)

दिनांक: 22.02.2023

आपके उद्यम माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड की राजभाषा पत्रिका 'जलतरंग' का 18वाँ अंक प्राप्त हुआ। पत्रिका भेजने के लिए धन्यवाद। पत्रिका के माध्यम से उद्यम में संपन्न विभिन्न गतिविधियों की जानकारी प्राप्त हुई।

सबसे पहले 'उत्कृष्ट गृह-पत्रिका पुरस्कार' प्राप्ति के लिए संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई। पत्रिका में तकनीकी, साहित्यिक और सामान्य विषयक सामग्री का सामंजस्य प्रशंसीनय व प्रोत्साहनवर्द्धक है। तकनीकी आलेख नवीनतम पनडुब्बियों की आधारभूत जानकारी प्रदान करते हैं। अनुवाद और राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित आलेख भी जानकारीप्रद हैं। 'एक वेल्डर से उप महाप्रबंधक' शीर्षक आत्मकथात्मक लेख के लिए साधुवाद। अन्य सभी रचनाएँ पठनीय हैं।

सुंदर मुखपृष्ठ और आकर्षक कलेवर के साथ रंगीन पत्रिका के प्रकाशन के लिए पुनः बधाई !

(होपनिधि शर्मा)
उप महाप्रबंधक (मा.सं. रा.भा.)
एवं सदस्य सचिव, नराकास (उ)
भारत डायनामिक्स लिमिटेड (BDL)

दिनांक: 04.08.2023

माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड, मुंबई द्वारा प्रकाशित राजभाषा पत्रिका "जलतरंग" का 19 वां अंक की एक प्रति प्राप्त हुई , पत्रिका की प्रति भेजने के लिए हार्दिक धन्यवाद।

पत्रिका के अवलोकन एवं अध्ययन में पाया गया है कि 64 पृष्ठों की इस पत्रिका की साज-सज्जा अत्यंत आकर्षक एवं रोचक है। माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड, मुंबई के विभिन्न विभागों में समय-समय पर आयोजित विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड की पूर्ण जानकारी प्राप्त होती है।

माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड में विभिन्न पदों पर कार्यरत अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा विभिन्न विधाओं में लिखे गए लेखों को पत्रिका में शामिल किया गया है, इसके लिए आपको बहुत बधाई और शुभकामनाएं। पत्रिका में प्रकाशित "एमडीएल का युद्ध पोत निर्माण, एक देश एक राशन कार्ड योजना, पनडुब्बी निर्माण और माझगांव डॉक" आदि लेख संग्रहणीय एवं उल्लेखनीय हैं।

भारत सरकार की राजभाषा नीति संबंधी लेखों को पत्रिका में शामिल करके पत्रिका को पाठकों के लिए और अधिक उपयोगी बनाया जा सकता है। माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड की राजभाषा पत्रिका "जलतरंग" के उज्ज्वल भविष्य की कामना सहित!

(विनोद कुमार मेहरा)
मुख्य राजभाषा अधिकारी
मुंबई रेलवे विकास कॉर्पोरेशन लि. (MRVC)

दिनांक: 28/08/2023

आपसे भेजा गया पत्र संदर्भ क्रमांकः राभा/14/2023, दिनांकित 23/08/2023 के साथ संलग्न एमडीएल राजभाषा पत्रिका "जलतरंग" का 19वां अंक हमें दिनांक 25/08/2023 को प्राप्त करके हार्दिक प्रसन्नता हुई।

उत्कृष्ट पत्रिका एवं विषय सूची मे छपे गए लेख, कविता, स्वास्थ्य विषयी लेख एवं सभी विषय बहुत उल्लेखनीय है, इस प्रकाशन के लिए संपादक एवं सभी सहयोगियों कों हार्दिक बधाई एवं ढेर सारी शुभकामनाएं।

गजानन करपे
अधिकारी
मंगलूर रिफाइनरी एण्ड पेट्रोकेमिकल्स लिमिटेड (MRPL - मुंबई कार्यालय)

दिनांक: 02 अगस्त 2023

हमें माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड, मुंबई , द्वारा प्रकाशित गृह पत्रिका "जलतरंग" अंक 19 माह मार्च 2023 की एक प्रति प्राप्त हुई है। हम पत्रिका भेजने के लिए हम आभारी हैं। हम पत्रिका में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए सभी लेखकों की सराहना करते हैं।

इस पत्रिका में प्रकाशित, एमडीएल का युद्धपोत निर्माण, हिंदी राष्ट्रभाषा, राजभाषा और जनभाषा, सुनहरा पौधा, मेरा हिंदुस्तान, मानसिक स्वास्थ्य, आदि, पाठकों को आकर्षित करती हैं। हम इस पत्रिका के सभी लेखकों और संपादक मंडल को एक बेहतरीन पत्रिका के लिए हम शुभकामनाएं देते हैं।

धन्यवाद और सादर के साथ।

डॉ. संजय रामराजे
मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)
एम एम टी सी लिमिटेड (MMTC)

दिनांक: 07/05/2024

"जलतरंग' में विविधता होती हीं है। आपके उपक्रम की राजभाषा पत्रिका के प्राप्त दोनों ही अंक विविध रंगों और तरंगों से भरपूर हैं। ज्ञानवर्धक सामग्री के साथ साथ इन दोनों अंकों में साहित्यिक सह मनोरंजक सामग्री को भी संजोया गया है। जो आपकी सम्पादन कुशलता को प्रमाणित करता है। तकनीकी और समसामयिक विषयों से सम्बंधित कई आलेख इन अंकों में हैं, जिनके कारण यह पत्रिका पठनीय होने के साथ ही संग्रहणीय भी है।

आपके संस्थान को बहुत-बहुत धन्यवाद आपको इस कुशल सम्पादन के लिए धन्यवाद मेरी शुभकामनाएं स्वीकार करें।

डॉ. आशुतोष कुमार तिवारी
राजभाषा विभाग व नराकास सचिवालय,
दुर्गापुर इस्पात संयंत्र (सेल)

में जलतरंग

दिनांक: 08.03.2023

उपर्युक्त विषय से संबंधित आपके दिनांक 13 फरवरी 2023 का संदर्भ क्रमांक राभा/01/2023 हमें दिनांक 27 फरवरी 2023 को आपकी हिन्दी पत्रिका "जलतरंग" के साथ प्राप्त हुआ।

उक्त पत्रिका में हिन्दी से संबंधित विभिन्न विषयों पर जानकारी दी गई , विशेष तौर पर आपके कार्यालय में राजभाषा से जुड़ी विषयों पर जानकारी दी गई जिसमे मुख्य रूप से सतर्क भारत , समृद्ध भारत , महामारी कोविड-19 का आर्थिक प्रभाव जैसे विषयों को विभिन्न विषयों के साथ उजागर किया गया है. यह आपके टीम द्वारा किया गया प्रशंसनीय कार्य है।

हम , हिन्दुस्तान शिपयार्ड लिमिटेड, विशाखपट्टणम कार्यालय की ओर से हिन्दी कार्यो से जुड़े सभी कर्मचारियों को शुभकामनाएं प्रकट करते हैं और आशा करते है कि आपके द्वारा प्रकाशित अगला अंक और भी बेहतर हो इसकी आकांक्षा करते हैं। इन शुभकामनाओं सहित।

(एस. पापाराव)
प्रबंधक (राजभाषा)
हिन्दुस्तान शिपयार्ड लिमिटेड (HSL)

नरेश कुमार
संयुक्त निदेशक
Naresh Kumar
Joint Director

GOVT. OF INDIA
MINISTRY OF HOME AFFAIRS
DEPTT. OF OFFICIAL LANGUAGE
केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो
CENTRAL TRANSLATION BUREAU

दिनांक: 10 फरवरी , 2017

आपकी एमडीएल राजभाषा पत्रिका "जलतरंग" का अंक 6, सितंबर 2016 की एक प्रति प्राप्त हुई , धन्यवाद। मुख्य पृष्ठ बहुत ही सुन्दर एवं आकर्षक है। पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख पठनीय एवं ज्ञान वर्धक है। 'कोलाबा', 'अफगान चर्च', 'डेविड ससून' एवं 'हॉर्निमन सर्कल' पढ़कर मुंबई के अतीत के बारे में जानकारी मिली।

साथ ही स्वास्थ्य संबंधी लेख एवं कविताएं भी अच्छी लगी। पत्रिका के सुन्दर प्रकाशन के लिए संपादक मंडल से जुड़े सभी लोगों को हार्दिक बधाई ! आशा है कि भविष्य में भी आप इस प्रकार की पत्रिका प्रकाशित करते रहेंगे और हमें भी अवगत कराते रहेंगे।

(एस.वी. प्रसाद)
उप अधिकारी (हिन्दी)
इंडियन रेअर अर्थ्स लिमिटेड (IREL)

दिनांक: 09.07.2024

माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड, मुंबई की राजभाषा पत्रिका 'जलतरंग' का 20वां और 21 वां अंक प्राप्त हुआ। हमारा आभार स्वीकार करें। संघ की राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं उसके कार्यान्वयन में इस पत्रिका की भूमिका सराहनीय व प्रेरणास्पद है। सृजनात्मकता और भावाभिव्यक्ति से भरपूर पत्रिका की रचनात्मक सामग्री सुरुचिपूर्ण है व अपूर्व पठन सुख प्रदान करने वाली है।

पत्रिका में जिस तरह नराकास से उत्कृष्ट पत्रिका पुरस्कार हासिल करने का उल्लेख है उसके लिए 'जलतरंग' सर्वथा उपयुक्त है। कामना है कि भविष्य में पत्रिका निरंतर पुरस्कार प्राप्त करती रहेगी। सामान्य तौर पर 'जलतरंग' के 20 व 21 वें अंक के तकनीकी लेख अत्यंत ज्ञानवर्धक हैं। यात्रा वृतांत , संस्मरण , पर्यावरण , शिक्षण , स्वास्थ्य संबंधी आलेख अत्यंत उपयोगी हैं। सुरुचिपूर्ण रचनाओं के रूप में दी गई अन्य सामग्री भी अत्यंत रोचक है।

राजभाषा के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने में 'जलतरंग' की भूमिका सार्थक रहने वाली है। पत्रिका में विविध विषयों की बड़ी खूबसूरती से प्रस्तुत की गई रचनाओं के लिए पत्रिका के संपादक मंडल को धन्यवाद एवं अगले अंक के लिए शुभकामनाएं।

(एस रजनीश कुमार)
उप प्रबंधक (राजभाषा)
के आई ओ सी एल लिमिटेड (KIOCL LIMITED)

दिनांक: 05.06.2024

माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड, मुंबई की राजभाषा पत्रिका 'जलतरंग' का 20वां और 21वां अंक हमें प्राप्त हुआ ! प्रतिवर्ष 'जलतरंग' पत्रिका को आप नये नये रूप प्रदान करते हैं। जलतरंग पत्रिका पढ़ने के बाद मन में एक अलग ही तरंग उत्पन्न होती है।

इस पत्रिका में पनडुब्बी और युद्धपोतों के बारे में नये-नये आयामों का निर्माण किन किन परिस्थितियों का सामना करके किया जाता है इसके बारे में झांकी पत्रिका में दिखाई गई है वह बहुत ही रोचक एव सराहनिय है। इसके अलावा आज जो समाज एवं सूचना प्रोद्योगिकी के गंभीर विषय है उन पर भी काफी सरल भाषा में गहराई से प्रकाश डाला गया है। मैं एक बार पुन: आपका धन्यवाद करता हूं तथा आशा करता हूं की जलतरंग ऐसे ही निरंतर आगे बढ़ती रहे।

(धर्मेन्द्र कुमार)
संयुक्त प्रबंधक (तकनीकी / राजभाषा)
नेशनल टेक्सटाइल कॉर्पोरेशन लिमिटेड (NTC)

दिनांक: 10.07.2024

'जलतरंग' के ये दोनों अंक कई रोचक, जीवंत और जीवन के व्यावहारिक पक्षों के विषयों को समायोजित किए हुए हैं। पत्रिका के 20वें अंक में 'सोमवार से रविवार' कविता , माँ की सीख का जादू निबंध , भारत का सफल मिशन चंद्रयान 3 कविता उल्लेखनीय है। इसी प्रकार हम 21वें अंक में 'सभापति की ज़िम्मेदारी', 'पर्यावरण के प्रति हमारी वचनबद्धता' और शिक्षण के माध्यम के रूप में हिन्दी पर लिखें गए निबंधों का उल्लेख करना चाहेंगे। 'जलतरंग' पत्रिका के दोनों अंक पठनीय एवं ज्ञानवर्धक हैं।

(अजयेन्द्रनाथ त्रिवेदी)
मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)
यूको बैंक (UCO Bank)

दिनांक: 01 अप्रैल , 2025

आपके पत्र दिनांक 25.03.2025 के माध्यम से प्रेषित राजभाषा पत्रिका 'जलतरंग' का 22 अंक प्राप्त हुआ। इसके लिए आपको सहर्ष धन्यवाद। इस पत्रिका की साज-सज्जा बहुत ही आकर्षक है और इसमें प्रकाशित सामग्री सूचनापरक एवं अत्यंत उपयोगी है। इसमें तकनीक, उद्यम , भाषा , साहित्य जैसे अनेक विषयों को शामिल किया गया है।

श्री दिनेश नारायण मढवी द्वारा रचित 'माँ-बेटे का संवाद' कविता ने विशेष रूप से ध्यान आकर्षित किया। यह राजभाषा हिन्दी के प्रति कर्मचारियों को प्रेरित करने की दृष्टि से अच्छा प्रयास है। इससे राजभाषा के प्रचार-प्रसार एवं कार्यान्वयन को अवश्य गति मिलेगी। इस प्रयास के लिए संपादन समिति एवं लेखक वर्ग बधाई के पात्र हैं।

(डॉ. शेजाळ सुर्यावा जगन्नाथ)
अधिकारी (राजभाषा)
हिन्दुस्तान एरोनॉटिक्स लिमिटेड (HAL)

दिनांक : 02/05/2025

आपकी पत्रिका 'जलतरंग' का 22वां अंक पढ़कर अत्यंत प्रसन्नता हुई। पत्रिका में आपके संगठन के क्रियाकलापों एवं कार्यशैली की एक झलक दिखाई देती है। 'साइबर सुरक्षा' बेहद रोचक लेख है। इसके अलावा , 'माँ-बेटे का संवाद' कविता दिल को छूने वाली है। श्री सिमनलाल आर्य का सहायक पद तक का सफर संघर्ष का कटु अनुभव कराता है। पत्रिका का यह अंक पठनीय एवं संग्रहणीय है।

(राजेन्द्र कुमार शर्मा)
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)
गोवा शिपयार्ड लिमिटेड (GSL)

विशेष उपलब्धियाँ

दिनांक 10 मार्च 2026 को आयोजित 'आत्मनिर्भर सबमरीन इकोसिस्टम कॉन्क्लेव' में उपस्थित अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक कैप्टन जगमोहन, निदेशकगण एवं अन्य वरिष्ठगण।

दिनांक 05 नवंबर 2025 को राजभाषा एवं प्रबंधन विकास संस्था द्वारा माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड को हिंदी में उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन हेतु सम्मानित किया गया।

जलतरंग

25 रजत अंक

मार्च-2026

राष्ट्र के लिए युद्धपोत एवं पनडुब्बी निर्माता

अंक-25